WHAT A YOUNG BOY OUGHT TO KNOW.

जन्मबोध।

PUBLISHED BY THE CHRISTIAN LITERATURE
SOCIETY, ALLAHABAD.

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1906.

1st *Edn.* 1000.] *Price 3 annas.* [दाम तीन आना।

जन्मबोध ।

मैं किस रीति से जगत में आया ।

ज्ञानीलाल कैसा लड़का था ।

ज्ञानीलाल हर दिन अपनी माता के पास बैठके यीशु चरित्र नाम पुस्तक का एक एक पर्ब्ब पढ़ा करता था । एक अठवारे के लिये वह अपने मामू के घर गया । वहां से लौटके क्या देखता है कि उस की माता खाट पर लेटी है और उस के पास एक छोटा बच्चा सोया पड़ा है । उस की माता ने उस से कहा ज्ञानो इधर आओ और अपनी छोटी बहिन को देखो । छोटी बहिन का नाम सुनके ज्ञानीलाल आनन्द से नाचने लगा । पर दूसरे दिन सोच बिचारके उस ने अपनी माता से पूछा हे माता मेरी छोटी बहिन कहां से आई । ज्ञानीलाल के माता पिता ने इस प्रश्न का उत्तर देने को इस पुस्तक के लिखनेहारे से कहा सो उस ने जो जो पत्र लिखे वह अब लिखे जाते हैं ।

प्यारे ज्ञानीलाल ।

हम लोग कहां से और कैसे इस जगत में आये यह प्रश्न जो तुम ही ने किया है सो नहीं पर समझदार लड़के बाले यह प्रश्न बहुधा किया करते हैं इस रीति के प्रश्न करना बुरा वा बेलगाव नहीं है । वह लड़के धन्य हैं जो ऐसे प्रश्न किसी मूर्ख वा बुरे लोगों से नहीं पूछके अपने माता पिता वा किसी ज्ञानी पुरुष से पूछते हैं । क्योंकि अनहोना है कि

मूर्ख और बुरे लोग इस प्रश्न का ठीक उत्तर दे सकें। वे ऐसा उत्तर देंगे जिस से उन के मन की बुराई प्रगट होगी। तुम यदि पूछते कि एंजन कहां से आया है तब मैं तुम को बता देता कि जार्ज स्तिफेन्सन साहेब ने पहिले पहिल कैसे एंजन बनाया था।

तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर कि हम कहां से आये भली भांति समझाने के लिये मैं पहिले तुम्हें आदि पिता माता आदम और हव्वा कहां से आये वह बात बताऊंगा। बैबल शास्त्र के आरम्भ में तुम ने सृष्टि का सुन्दर वृत्तान्त पढ़ा होगा। सो तुम जानते हो कि ईश्वर ने आदम और हव्वा को सृजा था। पर क्या जाने तुम ने उस वृत्तान्त को भली भांति समझा न होगा। सो मैं उस को अब सरल रीति से बताता हूं।

बैबल शास्त्र के पहिले पद में लिखा है कि आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथिवी को सृजा। सृजना और बनाना इन दो शब्दों में बड़ा भेद है। राज मिस्त्री ईंटा चूना सुर्खी कड़ी तखता इत्यादि से घर बना सकता है पर वह किसी वस्तु को सृज नहीं सकता। राज मिस्त्री के काम में और ईश्वर के काम में बड़ा भेद है। क्योंकि ईश्वर ने जब सारी सृष्टि को सृजन करने चाहा तब सृष्टि की रचना के लिये न मिट्टी न पत्थर न पानी न और कोई वस्तु थी।

ईश्वर के ज्ञान और शक्ति की सीमा नहीं है। इस लिये अपनी इच्छा पूरी करने के लिये उसे मिट्टी पत्थर वा किसी वस्तु का प्रयोजन नहीं उस ने जिस वस्तु के लिये आज्ञा किई वही हो गया। उत्पत्ति नाम पुस्तक को पढ़ने से जाना जाता है कि ईश्वर ने आदि में सूर्य्य चांद तारे और पृथिवी को सृजा। बहुत दिन पीछे उस ने गाछ वृक्ष मछली पशु और पक्षी और सब के पीछे उस ने मनुष्य को सृजा।

थोड़ा सोचने से जाना जाता है कि सारी सृष्टि में दो प्रकार की चीजें हैं एक जड़ जैसे सूर्य्य चांद पृथिवी इत्यादि जिन में जीवन नहीं है और दूसरी चैतन्य जैसे गाछ वृक्ष लता मछली पशु पक्षी और मनुष्य इत्यादि जिन में जीवन है। फिर सूर्य्य चांद और पृथिवी इत्यादि जड़ पदार्थ बराबर बने रहते हैं और गाछ वृक्ष लता मछली पशु पक्षी और मनुष्य इत्यादि जो सजीव हैं थोड़े दिन ठहरते हैं सो यह मरके पृथिवी से लोप न हो जावें इस लिये ईश्वर ने जैसे पहिले गाछ वृक्ष लता मछली पशु पक्षी और मनुष्य इत्यादि को सृजा वैसे ही बराबर उन को सृज सकता था। पर उस ने उस से और भी भले उपाय को काम में लाया। उस ने अपने असीम ज्ञान और शक्ति के द्वारा उन को ऐसी अनोखी शक्ति दिई है कि वे अपने ऐसे और जीवों को उत्पन्न कर सकते हैं। सजीव बस्तु अपने ऐसे और जीवों को उत्पन्न कर सकते हैं यह बड़ी भारी बात है। अब मैं ईश्वर को साम्हने मानके इस बात के बिषय लिखने चाहता हूं। बैबल में लिखी हुई सृष्टि कथा को दूसरे दिन के पत्र में भली भांति लिखूंगा।

ता: १ माघ १३०६। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——

प्यारे ज्ञानीलाल।

गाछ वृक्ष लता मछली पशु पक्षी और मनुष्य इत्यादि चैतन्य बस्तु पृथिवी से मर न मिटें इस लिये ईश्वर ने जो उपाय किया उस का बर्णन मैं इस पत्र में लिखूंगा।

बैबल शास्त्र के पहिले पर्ब्ब के पढ़ने से बोध होता है कि

यहोवा परमेश्वर से पूरब ओर एदन देश में एक बारी से हरी घास और बीजवाले छोटे छोटे पेड़ उगने लगे और फलदाई वृक्ष भी जो अपनी अपनी जाति के अनुसार फलें।

तुम को स्मरण होगा कि तुम्हारे जन्म दिन में जब मैं तुम्हारे घर गया था तो तुम मेरे साथ बाड़ी में टहलने गये थे। उस समय तुम ने मुझे अपने नीम गाछ के नीचे नीम के छोटे चारे दिखाये थे। उन्हें देखके तुम ने बड़े आनन्द से कहा था कि देखिये नीम गाछ के चारे मानो अपनी माता की गोद में हैं। उस पर मैं ने कहा था हां ठीक है वे चारे नीम गाछ के बच्चे हैं और नीम गाछ मानो उन की माता है क्योंकि वे उस नीम गाछ के बीज से जन्मे हैं। केवल नीम गाछ को नहीं पर ईश्वर ने आम कटहल ताड़ इत्यादि सब प्रकार के गाछ को चारा जन्माने की शक्ति दिई है।

गाछ वृक्ष तृण इत्यादि के जन्मने के पीछे ईश्वर ने नाना प्रकार की मछलियां पशु पक्षी और सब के पीछे मनुष्य को सृजा और उन को आशीष दिई और उन से कहा फूलो फलो और पृथिवी में भर जाओ।

बैबल शास्त्र के पहिले दो पर्ब्बों में मनुष्य के सृजे जाने के विषय में जो जो बातें लिखी हैं उस का बर्णन मैं अब लिखता हूं।

ईश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनावें और वे समुद्र की मछलियों और आकाशचारी पक्षियों और ग्रामपशुओं और सारी पृथिवी पर और सब रेंगनेहारे जन्तुओं पर जो पृथिवी पर रेंगते हैं अधिकार रखें। फिर यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उस के नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया सो आदम जीता प्राणी हुआ। और

जब समुद्र से मिट्टी निकली तब ईश्वर ने कहा कि पृथिवी लगाई और वहां आदम को जिसे उस ने रचा था रख दिया फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये ऐसा एक सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खावे। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को घोर निद्रा में डाल दिया और जब वह सो गया तब उस ने उस की पसुलियों में से एक को निकालके उस को सन्ती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उस को आदम के पास ले आया। और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है सो इस का नाम नारी होगा क्योंकि यह नर में से निकाली गई। सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार सृजा अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उस को सृजा नर और नारी करके उस ने उन्हें सृजा। और परमेश्वर ने उन को आशीष दिई और उन से कहा फूलो फलो और पृथवी में भर जाओ और उस को अपने बश में कर लेओ और समुद्र की मछलियों और आकाशचारी पक्षियों और पृथिवी पर रेंगनेहारे सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।

ईश्वर ने नये २ गाछ बृक्ष लता पशु पक्षी मछली मनुष्य इत्यादि उत्पन्न करने का उपाय जो ठहरा दिया सो इसी बृत्तान्त से जाना जाता है। जिस नियम पर गाछ बृक्ष और दूसरे जीव अपने ऐसे नये २ गाछ वृक्ष और नये नये जीव उत्पन्न करते हैं उस नियम को ईश्वर ने आपही ठहराया है यह बात साफ है। फिर ईश्वर ने जब उस नियम को ठहरा दिया है तब जानते हैं कि यह नियम पवित्र है और उस में कुछ दोष नहीं।

आदम और हव्वा को सृजके ईश्वर ने अपना आश्चर्य्य ज्ञान और शक्ति प्रगट किई है। उस पर सोचने से उस की बड़ाई पर अचंभा होता है। फिर ईश्वर ने किस रीति से आदम और हव्वा को सन्तान दिया उस बात पर ध्यान देने से उस की बड़ाई का ज्ञान होता है। जिस समय ईश्वर ने जो हमारा स्वर्गबासी पिता है इस काम के नियम को ठहराया था और सृष्टि का काम पूरा करता था। तब उस के मन में किसी प्रकार की पाप की चिन्ता नहीं थी। सृष्टि के पहिले और पीछे ईश्वर ने इस विषय में जो जो चिन्ता किई हैं सो अवश्य पवित्र थीं तब हम भी उसी की नाईं उस विषय की चिन्ता कर सकते हैं। ईश्वर ने हम को जो शिक्षा दिई है वह अपवित्र और लाज की बात नहीं हो सकती। सचमुच मनुष्य के जन्म का नियम बहुत भला है। उस से मनुष्य का भला होता और ईश्वर की बड़ाई होती। पर इस विषय में और दूसरे बिषयों में भी यदि हम बुरे लोगों की बातों पर कान धरें तब हमारे मन में पाप जागेगा इस बात में सन्देह नहीं।

अपने ऐसे दूसरे को उत्पन्न करने की शक्ति ईश्वर ने सब प्रकार के गाछ बृक्ष और जीव जन्तु को दिई है यदि वह सृष्टि करने की शक्ति नहीं है पर किसी किसी बात में वह उसी के ऐसी है। सचमुच वह शक्ति बड़े आश्चर्य्य की है।

ताः २ माघ १३०६।   तुम्हारा भला चाहनेहारा

श्री——

प्यारे ज्ञानीलाल।

ईश्वर की दया से तुम्हारे माता पिता जीते हैं वे तुम्हारा

बड़ा उपकार करते हैं। तुम्हारा पिता बली और साहसी पुरुष है। वह परदेश जाके तुम्हारे लिये कमाता है। तुम्हारी प्यारी माता घर में रहके तुम्हारा पालन करती है।

हमारे माता पिता की नाईं गाय बैल भी अपने बच्चों को बचाते हैं। मैं ने सुना है कि जब गाय बैल के झुण्ड जंगल में चरते हैं तब यदि बाघ वा कोई दूसरा फाड़खाऊ जीव उन पर झपटे तब गाय बैल बच्चों को घेर लेते हैं और बच्चों को अपने पीछे करके बैरी से उन्हें बचाते हैं। इस रीति से गाय बैल मिलके बच्चों को फाड़खाऊ जीव से बचाते हैं।

पशुओं की नाईं पक्षियों में भी बच्चों का प्यार है। वे भी हमारे पिता माता की नाईं अपने अपने बच्चों को पालती हैं। पिछले बैशाख में एक जोड़ा मैना ने मेरे बड़े आम गाछ के कोटर में खोंता लगाया था। मादिन मैना जब अण्डे सेया करती थी तब नर उस के पास बैठके मीठे राग से गीत गाया करता था।

पशु पक्षी की नाईं गाछ बृक्ष लता इत्यादि में भी नर मादिन होता है। सचमुच हर एक चारे का पिता माता दोनों हैं। पिछले साल तुम्हारी बाड़ी में बहुत मकई हुई थी। तुम ने देखा होगा कि जब मकई का गाछ बहुत बढ़ जाता है तब उस की डांढ़ में से कहीं कहीं मोचा फूटता है जिस में बहुत से बाल के ऐसे पतले पतले नल होते हैं। उन बाल से नलों का नाम गर्भ केशर है। मोचा के बाल से नल निकलते न निकलते मकई के गाछ के ऊपर धनबाल फूटता है। उस के हर एक छोटे फूल में भी कई एक बाल से पतले नल रहते हैं। हर एक वैसे नल के मुंह पर पीले रंग की फूल की धूल रहती है। यही धूलवाले फूल पिता स्वरूप हैं और गर्भ

केशर नाम बाल से पतले नल माता स्वरूप हैं। मकई की डांठ जब हवा से हिलती है तब वह फूल की धूल ऊपर से गिरती है और गर्भ केशर के बाल से पतले नलों के भीतर होके जहां दाना होता है वहां पहुंचती है। जिन दानों में यह धूल पहुंचती है वे पुष्ट होते हैं और उन को बोने से वे जन्मते और उन से नये नये मकई के गाछ होते हैं।

कभी कभी एक गाछ में फूल की धूल और दूसरे गाछ में गर्भ केशर देखा जाता है। तुम ने देखा होगा कि पपीते के सब गाछ एक से नहीं होते। जो फलवन्त गाछ होते हैं उन में बड़े बड़े फूल अलग अलग लगते हैं। पर जिन गाछों में फल नहीं लगता उन में थोक थोक छोटे छोटे फूल फूटते हैं। पपीता के जिन गाछों में फल नहीं लगता वे पिता स्वरूप हैं और उन के हर एक फूल में पपड़ी केशर नाम कितने पतले नल होते हैं जिन में फूल की धूल रहती है। फलवन्त पपीता गाछ माता स्वरूप है। उस के हर एक फूल में से गर्भ केशर नाम कितने पतले नल निकलते हैं। जिन पपीता गाछों में फल नहीं लगता वे मानो नर हैं और फलवन्त पपीता गाछ मानो नारी है। उन के बहुत दूर रहने से भी हानि नहीं होती। क्योंकि नर गाछ से फूल की धूल हवे से उड़के गर्भ केशर पर पड़ती है नहीं तो मधुमक्खी वा कोई दूसरा कीड़ा नर गाछ से फूल की धूल लेके नारी गाछ के गर्भ केशर में लगा देता है। उस से फूल के नीचे की छीमी में जो बीज रहते हैं वह पुष्ट होते और उन में चारा जन्माने की शक्ति आजाती है। उस शक्ति को जन्मानेहारी शक्ति कहते हैं। इस रीति से जब नर और नारी गाछ मरके मिट्टी में मिल जाते हैं तब उस बीज से नये नये पपीता गाछ होते हैं।

ऊपर लिखी हुई बातों से तुम्हारी समझ में यह बात आई होगी कि ईश्वर किस उपाय से नये नये बीजवाले छोटे पेड़ और फलदाई गाछ वृक्ष उत्पन्न करता है।

ईश्वर यदि छोटे पेड़ और फलदाई गाछ वृक्ष को अपनी २ जाति के अनुसार नये नये छोटे पेड़ और गाछ वृक्ष उत्पन्न करने की शक्ति नहीं देता तो उसे लगातार नये नये छोटे बड़े पेड़ों को सृजना होता और नहीं तो सब गाछ वृक्ष मरके पृथिवी पर से लोप हो जाते। फिर जब फल और अन्न नहीं रहते तो मनुष्य और सब जीवधारी मर मिटते। अब तुम ने समझा होगा कि तुम्हारी प्यारी छोटी बहिन को देखके तुम ने जो प्रश्न किया था उस प्रश्न का उत्तर ईश्वर ने बैबल शास्त्र में हम को पवित्र रीति से समझा दिया है। फिर तुम्हारे प्रश्न का पूरा पूरा उत्तर बैबल शास्त्र के अनुसार आगे को धीरे २ लिखूंगा।

ताः ३ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री——

प्यारे ज्ञानीलाल।

जिन सजीव बस्तुओं की बात मैं ने दूसरी तारीख के पत्र में लिखी थी वे दो प्रकार के होते हैं। एक तो अचेतन और दूसरे सचेतन होते हैं। अचेतन को कोई इन्द्री नहीं होती। गाछ वृक्ष लता और छोटे पेड़ अचेतन कहलाते हैं। हम ने उन के विषय सोचके देखा है कि उन के नर भाव और नारी भाव के मिलने से बीज होता है। सृष्टि के आदि से यह

नियम चला आता है और यह सृष्टि के अन्त लों बना रहेगा।

सचेतन जीवों को पांचों इन्द्रियां हैं क्योंकि वे देख सुन सूंघ चख और छू सकते हैं। कितने जीवों में कम से कम एक इन्द्री और नस होता है। सीपी मछली पक्षी पशु और मनुष्य सचेतन कहलाते हैं।

हम अब सचेतन जीवों के विषय बिचार करेंगे। गाछ में जैसे नर भाव और नारी भाव के मिलने से बीज होता है वैसा ही सचेतन जीवों में भी नर और नारी के मिलने से अंडा होता है। सांप और चिड़िया के अंडा पर कड़ा छिलका होता है पर सब जीवों के अंडा पर कड़ा छिलका नहीं होता।

हम जानते हैं कि गाछ वृक्ष जो अचेतन वस्तु हैं उन का नर भाव से फूल की धूल होती है और वही धूल जब नारी भाव की छीमी में जाती है तब दाना पुष्ट होते हैं और उन से नये नये पेड़ जन्मते हैं। पर सीपी मछली पक्षी इत्यादि सचेतन जीवों में फूल की धूल के बदले एक पानी सी चीज होती है और उन के नारी भाव से अंडे का दूसरा भाग होता है। यह दो चीजें किसी उपाय से एकट्ठी होने से अंडा पुष्ट होता है। इस रीति से वे अपनी अपनी जाति के नये नये जीव जन्मा सकते हैं।

क्या तुम ने घोंघा को कभी देखा है। घोंघा को सुनने देखने वा सूंघने की शक्ति नहीं होती। होय तो उसे चखने की भी शक्ति नहीं होती। हो सकता है कि उसे केवल छूने की शक्ति है। इस लिये यह जीवों में सब से नीच जीव है।

बहुत से ऐसे पौधे और गाछ वृक्ष हैं जिन का नर और नारी भाव एक ही गाछ में और कभी २ एक ही फूल में होता

है। वैसा ही एक एक घोंघा में नर और नारी भाव दोनों होते हैं। एक ही घोंघा एक एक समय में बहुत से अंडे देता है। बसन्त में जब वे अण्डे पुष्ट होते हैं तब घोंघा उन को अपने देह से अलग कर देता है। जल में धंसते धंसते वे अण्डे किसी पत्थर से वा सीपो से वा दूसरे घोंघा से लगके अटक जाते हैं। तब उन की छोटी देह की चारों ओर छिलका जन्मने लगता। घोंघे का छिलका ही उस का कपड़ा और घर है। इस रीति से एक ही घोंघे से बहुत से उस के बच्चे होते हैं।

मछली के अण्डे देने का नियम दूसरा है। ईश्वर ने हर मछली को नर वा मादा बनाया है। इस लिये लड़केबालों की नाईं छोटी छोटी मछलियों के भी माता पिता हैं।

तुम ने कभी अपनी टहलुइन को हिलसा मछली काटते देखा होगा। कभी कभी तुम ने उस मछली के पेट में बहुत से छोटे छोटे अण्डे देखे होंगे। हिलसा मछली समुद्र के गहिरे पानी में रहती है। जब उस का गर्भ अण्डे से भर जाता तब वह बसन्त में समुद्र छोड़के टिकने का स्थान ढूंढ़ती हुई नदियों में आ जाती है। तब मादा मछली के पीछे पीछे नर भी चलता है। मनभावने स्थान पर पहुंचके मादा मछली अण्डा देने लगती है और अण्डे जल में धंसने लगते हैं। मादा मछली जब अण्डा देती २ आगे तैरती है तब नर धीरे २ अण्डों के साथ तैरता हुआ बत्तक के अण्डे की सुफेदी के ऐसी एक पतली चीज़ निकालता है। उस चीज से अण्डे पुष्ट होते हैं। इस रीति से नदी में अण्डे देके यह मछलियां समुद्र में लौट जाती हैं और अपने बच्चों को कभी नहीं देखतीं और देखने से कभी चीन्ह भी नहीं सकतीं। फिर जल के तोड़ से

और धूप की गरमी से थोड़े दिन में अगडे फूटते हैं और उन में से छोटी २ मछलियां निकलती हैं। घोंघा के बच्चों की नाईं मछली के बच्चों का भी लालन पालन उन के माता पिता नहीं करते।

तुम ने अब समझा होगा कि मछली के बच्चे कैसे होते हैं। कल मैं तुम को फिर पत्र लिखूंगा और उस में बताऊंगा कि पशु पक्षी के बच्चे कैसे होते।

ताः ४ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ———

प्यारे ज्ञानीलाल।

अगले पत्र में मैं ने जो प्रतिज्ञा किई थी उस के अनुसार आज मैं तुम को बताऊंगा कि पशु पक्षी के बच्चे कैसे होते। तुम को स्मरण होगा कि पिछले बैसाख महीने में जब मैं तुम्हारे घर गया था तब तुम्हारे माली ने तुम को कितने कद्दू के बोज दिये थे। तुम ने समझा था कि उन बीजों में एक २ कद्दू का गाछ छिपा है। मैं ने तुम्हारे साथ बाड़ी में जाके उन बीजों को मिट्टी के नीचे गाड़ दिया था। मिट्टी के रस से और धूप की गरमी से बीज अंकुरा गये। मैं उन अंकुरों को देख भी आया था और समझता हूं कि उन कद्दूओं की लता में बड़े बड़े कद्दू फले होंगे।

एक दिन तुम ने मुझे फूल के गाछ पर एक खोंता दिखाया था जिस में बुलबुल ने तीन अगडे दिये थे। तुम ने समझा होगा कि जैसे बीज से चारा होता है वैसाही अगडे से पक्षी के बच्चे होते हैं। सचमुच अगडा माने बीज है। चिड़ियां

मिट्टी के भीतर नहीं पर खोतों में अण्डे देती हैं फिर मादा पक्षी अण्डे सेवती है तब ईश्वर की इच्छा से अण्डे में बच्चा बनता है। फिर तीन अठवारा लगते लगते बच्चा अण्डे का छिलका तोड़के बाहर निकल आता है।

जब मादा चिड़िया अण्डे को सेवती है तब उस का नर भी दूर नहीं रहता। वह किसी डाल पर पास ही बैठके मीठी राग से गा गाके मादा को प्रसन्न रखता वा कीड़े मकोड़े भात वा अन्न के दाने लाके उसे खिलाता है। कभी कभी अण्डा सेवते सेवते मादा थक जाती है तब नर और मादा एक साथ कुछ दूर उड़ जाते पर थोड़ी ही देर में नर लौटके मादा के बदले अण्डे सेवता है और मादा को आराम देता है। पक्षियों के इस प्रेम को देखके हम को भी प्रेम करना सीखना चाहिये।

पक्षी के जब बच्चे होते हैं तब उन के पिता माता उन के लिये खाने की चीज ढूंढ ढूंढके लाते हैं। थोड़े दिनों में जब उन के पंख उठने लगते हैं तब चिड़िया अपने बच्चों की बड़ी रखवाली करती हैं कि वे कहीं खोते से नीचे गिर न जावें वा बिल्ली उन्हें खा न जावे। बच्चे कुछ दिन पीछे एक डाल से दूसरे डाल पर उड़के जा सकते हैं। फिर पूरा पर हो जाने से उन के अंग अंग पुष्ट होते हैं। फिर जब बसन्त आता है तब वे भी अपना अपना जोड़ा खोजके खोता लगाते और अण्डे बच्चे करते हैं।

मैं मछली और पक्षी के बिषय लिख चुका और अब पशु के विषय लिखता हूं। तुम जानते हो कि गाय बकरी कुत्ते इत्यादि जितने पशु हैं वे पक्षियों की नाईं अण्डे नहीं देते। इस का कारण यह है कि अण्डे बहुत टूट फूट जाते हैं। बहुत मछलियों के अण्डे बड़ी बड़ी मछलियां खा जाती

हैं। चूहे नेवल इत्यादि पक्षियों के बहुत अण्डों को खा जाते हैं। हम लोग भी अण्डे खाते हैं। कोई कोई मछली साल भर में करोड़ २ अण्डे देती है। चिड़िया भी साल भर में बहुत अण्डे देती है तौभी बहुत नाश हो जाने पर भी बंश की हानि नहीं होती। पर गाय इत्यादि बड़े जीवों के अण्डे वैसे नाश न होवें इस लिये ईश्वर ने उन के विषय में एक अच्छा नियम किया है। वे अपने बसेरों में अण्डे नहीं देते। पर गाय का अण्डा सांड़ के बीज के उस में पहुंचने से भी उस के शरीर के भीतर ही रहता। ईश्वर ने गाय के पेट में गर्भ नाम एक नरम थैली बनाई है। उसी में रहते रहते उस अण्डे में जीव पड़ता है और धीरे धीरे गाय का बच्चा बनता है फिर चिड़ियों के बच्चों की नाईं गाय का बच्चा भी उस अण्डे से बाहर निकलता है। बाहर निकलने के समय गाय के शरीर का एक द्वार खुल जाता है और बच्चा बाहर निकल पड़ता है।

जब लों बच्चा गाय के पेट से बाहर नहीं निकलता तब लों वह गाय के लोहू से पोसा जाता है। पीछे वह गाय का दूध पीके जीता है।

पशु का बच्चा कई एक अठवारे तक अपनी माता का दूध पीता है। दांत होने से वह दूध धीरे २ छोड़ देता और घासपात चरने लगता है। चूहा के से छोटे २ पशु दो एक महीने में पूरे डील के हो जाते पर हाथी के बच्चों को पूरी डील का होने में कई एक बरस लगते हैं। जितने छोटे जीव होते हैं उन का बच्चेपन भी थोड़े ही दिन तक रहता है। बड़े जीवों के बच्चे बहुत दिन लों बढ़ते रहते और उन को पूरी डील का होने में बहुत दिन लगता है। मनुष्य सब जीवों में श्रेष्ठ है। मनुष्य को ईश्वर ने सब जीवों पर बड़ा बनाया है कि वह सब पर

प्रभुता करे । इस बड़े पद के योग्य होने के लिये उसे बहुत बरसों तक अपनी समझ बूझ की शक्ति को बढ़ाना पड़ता है । इस लिये मनुष्य का बचपन लड़कपन और जवानी बहुत दिन लों रहती है । और दूसरे जीवों से मनुष्य को पूरी डील का होने में बहुत दिन लगता है ।

हे प्यारे ज्ञानीलाल बहुत से लड़के चाहते हैं कि हम जल्दी पूरी उमर के हो जावें और क्या जाने तुम भी उन की नाईं जल्दी पूरी उमर का होना चाहते हो । यह जान रखो कि जब लों तुम २५ बरस के न होगे तब लों पूरे मनुष्य नहीं हो सकोगे । जो भारी काम मनुष्य को करना उचित है उन कामों को करने के योग्य होने के लिये २५ बरस बहुत समय नहीं है । मनुष्य के धर्म्म को पालने के लिये जैसा नमूना और उपदेश तुम ने अपने घर में पाया है वैसा दूसरे लड़कों को बहुधा नहीं मिलता । तौभी तुम को ईश्वर की इच्छा पर चलने के लिये तैयार होने को जो समय लगता है उस में धीर्य्य धरके परिश्रम करना पड़ेगा ।

ताः ५ माघ १३०३ । तुम्हारा भला चाहनेहारा ।

श्री-

प्यारे ज्ञानीलाल ।

मैं तुम को गाछ वृक्ष मछली और पशु पक्षी की कथा लिख चुका । मनुष्य इस पृथिवी पर से लोप न हो जावें इस लिये ईश्वर ने जो उपाय ठहराया है उस की कथा आज मैं तुम को लिखता हूं ।

ईश्वर ने जैसे आदम और हव्वा को सृजा था वह यदि उसी रीति से हर एक पुरुष और स्त्री को सृजता तब किसी के

माता पिता नहीं होते और बिन लड़कपन और जवानी के पूरी डील के बनाये जाते तब हमारी दशा कुछ और ही होती। किसी का घर बार नहीं होता। किसी के माता पिता भाई बहिन बेटा बेटी नहीं होते और किसी को पुरुष रहता न स्त्री और कोई किसी का कुटुम्ब नहीं होता। फिर जीवन की शोभा और उमंग का कारण जो नेह प्रेम और भक्ति है सो पूरी पूरी लोप हो जाती। हम लोग जीवन की मानो जंजीर में कड़ी न होके तुम हम और सब लोग एक एक अलग कड़ी से रहते। कोई हमारे सुख में सुखी और दुःख में दुःखी नहीं होता। हमारी घटी को पूरी करने के लिये हमारा भार उठाने के लिये रोग के समय सेवा करने के लिये वा हमारे मर जाने पर रोने के लिये कोई भी नहीं रहता। बच्चों का हंसना लड़कों का खेलना स्कूल जाने का समय वा अपने २ उचित काम को करने का सुभीता कुछ भी नहीं होता।

ईश्वर सर्व्वशक्तिमान है और उस के ज्ञान की सीमा नहीं है। वह आदि में बहुत से मनुष्यों को सृज सकता था और उन से पृथिवी को भर दे सकता था। और जो लोग पहिले के मनुष्यों के पीछे पृथिवी पर होते उन को भी वह सृज सकता था पर उस ने देखा कि मनुष्य को इस रीति से सृजना ठीक नहीं होगा।

ईश्वर आनन्दित होता है दूसरों की सहायता करने में कि लोग उस को प्रेम करें और उस का धन्यवाद करें। इस लिये ईश्वर ने चाहा कि मनुष्य बहुत कुछ उस की नाईं होवें और दूसरों की सहायता करके उन के प्रेम और धन्यवाद के योग्य होवें। इस लिये उस ने ठहराया कि आदि में जैसे आदम हव्वा को सृजा था वैसा नहीं पर माता पिता के द्वारा मनुष्य को

सृजे। ईश्वर की यह इच्छा पूरी हो इस लिये उस ने आदम और हव्वा को नर और नारी करके सृजा और उन को बच्चे जन्माने की आश्चर्य्य शक्ति दिई।

तुम ने अब समझा होगा कि मनुष्यों में नर और नारी का होना ईश्वर का एक विशेष दान है सो इस विषय में दुष्ट लोगों की नाईं बुरी बातें न करके गम्भीर और पवित्र रीति से बातें करना चाहिये।

नर और नारी में जो भेद है वह ईश्वर की इच्छा से हुआ है। उसी ने नारियों को सुन्दर और दुर्ब्बल बनाया है और उन्हें स्वाभाविक ज्ञान दिया है। उसी ने नरों को बल और साहस दिया है। ईश्वर की इच्छा यह है कि पुरुष स्त्री की सहायता करे और सब प्रकार के बिपद और अपवित्रता से उसे बचावे। जो लोग पुरुष वा स्त्री भाव के विषय में हलकी और बुरी बातें कहते हैं वे अपना बुरा करते हैं इस लिये कि वे ईश्वर की बड़ाई को नहीं मानते और उस के महाज्ञान और शक्ति का अनादर करते हैं।

तुम्हारे माता पिता हर दिन तुम को दुलार करते हैं। तुम समझदार लड़के हो। तुम्हारे माता पिता तुम्हारे लिये आनन्द से पैसे खर्च करते और परिश्रम भी करते वैसे दूसरे तुम्हारे लिये नहीं करते। क्या जानें यह बात भी कभी तुम्हारे मन में आई होगी। यह इस लिये होता है कि तुम उन के एक भाग हो। जिस चीज़ से ईश्वर ने तुम को बनाया है उस का एक भाग तुम्हारी माता के शरीर में और दूसरा भाग तुम्हारे पिता के शरीर में था। बैबलशास्त्र में पुरुष और स्त्री के विषय में लिखा है कि वे एक ही तन होके रहेंगे। सचमुच तुम्हारे माता पिता

तुमही में एक तन हुए हैं। उन्हों ने तुम में मानो नया जीवन पाया है। केवल तुमही में नहीं पर तुम्हारी छोटी बहिन में भी जो थोड़े दिन हुए ईश्वर के ठहराये हुए नियम के अनुसार जन्मी है। ईश्वर ने इस रीति से माता पिता और उन के बच्चों को आपस में पास के नातेदार ठहरा दिया है।

पहिले जीवों को तो ईश्वर ने सृजा पर उस के पीछे सब जीव अण्डे से जन्मते आये हैं। मनुष्य का भी जन्म वैसा ही होता है। स्त्रियों के गर्भ में जो अण्डे होते हैं वह बड़े छोटे होते हैं यहां तक कि वे बिना दुर्बीन के दिखाई नहीं देते। पुरुष के शरीर में ईश्वर बीर्य्य नाम पानी सी पतली चीज़ बनाता है। पवित्र विवाह के पीछे एक साथ होने से पुरुष के बीर्य्य का कुछ अंश स्त्री के गर्भ में जाता है और उस के अण्डे से मिलता है। तब उस अण्डे में जीव पड़ता है। फिर धीरे धीरे उस में बच्चे का शरीर बनता है।

एक खीष्टियान स्त्री ने सोचा कि भला होगा कि इन बातों के विषय में मेरा पुत्र बुरे लोगों से न सीखे पर मैं उसे बताऊंगी। सो एक दिन उस ने अपने पुत्र से इस रीति से बातें किईं।

पुत्र। हे माता मैं पहिले कितना बड़ा था।

उस की माता ने उसे हंसते हंसते कहा कि पहिले तुम सुई के नोक से भी छोटे थे। बिना दुर्बीन लगाये तुम्हें कोई देख नहीं सकता था।

पुत्र। जब मैं इतना छोटा था तब बड़े आश्चर्य्य की बात है कि तुम ने मुझे खो न दिया।

माता। तुम्हारा स्वर्गबासी पिता यदि तुम्हारी रक्षा नहीं करता तो तुम अवश्य नाश होते। नन्हे बच्चे बड़े अन्मोल होते हैं इस लिये ईश्वर उन्हें उन की माता के शरीर के बीच में एक छोटे से घर में रख देता है कि जब लों वे बड़े होके माता से अलग होके जी न सकें तब लों वहीं रहें।

पुत्र। तब क्या मैं तुम्हारे भीतर किसी छोटे घर में रहता था।

माता। हां।

पुत्र। उस समय मैं कैसे खाता और सांस लेता था।

माता। तुम्हारे लिये मैं खाती और सांस लेती थी।

पुत्र। मैं कैसे रहता था क्या तुम को मालूम था।

माता। हां कभी कभी तुम्हारे छोटे छोटे हाथ पांव घर की दीवार से लगते थे। तब मैं कहती थी कि बच्चा मुझ से मानो बातें करने चाहता है मानो बोलता है कि माता मैं जीता हूं। तब मैं तुम से मानो बोलती थी बच्चा चुप रहो मैं तुम्हें प्यार करती हूं। फिर मैं सोचती रहती थी कि तुम्हारा रूप कैसा होगा।

पुत्र। हे माता मैं कितने दिन उस घर में था।

माता। तुम दश महीने वहां थे और हर दिन बढ़ते थे। तुम सुख से रहो इस लिये मैं भी प्रसन्न रहती थी। तुम भले चंगे रहो इस लिये खाने पीने की चीज समझ बूझके खाती थी। मैं जानती थी कि जैसा मैं रहूंगी वैसा ही तुम भी होगे इस लिये मैं नरम मिजाज दया करनेहारी धीर रहती थी अर्थात् जैसा मैं चाहती थी कि तुम हो वैसाही मैं रहती थी।

पुत्र। हे माता तुम जो खाती थीं उस से मैं कैसे पलता था।

माता । मैं जो खाती थी वह लोहू बनके तुम्हारे नस नस में जाता था ।

पुत्र । तुम्हारा लोहू मेरे नसों में कैसे पहुंचता था ।

माता । तुम ने कभी अपनी नाभी को देखा है । तुम्हारे जन्म के पहिले तुम्हारी नाभी का चमड़ा एक लंबे नल सा था । उस नल का दूसरा छोर मेरे साथ लगा था । उसी से होके मेरा लोहू तुम्हारे शरीर में पहुंचता था । तुम जब मुझ से अलग होने और जगत में आने लगे तब बड़ी पीड़ों के साथ तुम्हारी छोटी कोठरी का द्वार खुल गया तब तुम्हारा जन्म हुआ । जिस नल से हम तुम बंधे थे उसे जनाई धाई ने काट डाला और वही सूखके नाभी हुई । तुम्हारे सांस लेने से जब पहिली बार तुम्हारे फेफड़े में हवा गई तब तुम रोने लगे । तुम्हारा रोना सुनके मैं ने जाना कि तुम जीते हो । तब मैं आनन्दित हुई और पूछा कि पुत्र है वा कन्या । जनाई धाई ने तुम्हें धो धाके मेरी गोद में दिया । मैं तब जिस बच्चे को नहीं देखके भी प्यार करती थी उस का मुंह देखके अपना दुःख भूल गई । अब तुम ने समझा होगा कि मैं तुम्हें इतना प्यार क्यों करती हूं ।

इन बातों को सुनते सुनते उस लड़के की आंखें भर आईं । वह कहने लगा मैं तुम को सब से बढ़के क्यो प्यार करता हूं सो अब समझा । यह कहके वह अपनी माता को चूमने लगा ।

जो लोग ठीक रीति से अपनी पहिली बातों को समझते उन के मन में अचंभा और पवित्र भाव जाग उठता है । पर हमारे जन्म के विषय में ईश्वर का काम इतना गूढ़ है और अचंभे का है कि कोई ज्ञानी वा पण्डित उस को अब लों समझ नहीं सकता ।

देखो दस दिन हुए कि जो प्रश्न तुम ने अपनी माता से पूछा था उस का उत्तर मैं ने कई एक पत्र लिखके तुम को समझा दिया है। तुम ने जो बात पूछी थी वैसाही कई एक श्रोर बातें हैं। तुम्हारे पिता के कहने से मैं उन बातों को भी पत्र के द्वारा बता दूंगा।

ता: ६ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री———

प्यारे ज्ञानीलाल।

यह देखा जाता है कि माता पिता का चेहरा स्वभाव श्रोर चरित्र उन के बालबच्चों के साथ बहुत कुछ मिलते हैं इस लिये लोग कहा करते हैं कि जैसा बाप वैसा बेटा। मैं ने जो पत्र तुम्हें कल लिखा उस के पढ़ने से तुम ने इस बात को समझा होगा।

सृष्टि के समय ईश्वर ने ठहरा दिया था कि हर एक पेड़ अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज उत्पन्न करेगा। सो जब तुम तिल बोते हो तो तिल होता है श्रोर सरसों बोने से सरसों होता है। फिर तिल बोके तुम सरसों नहीं काट सकते न सरसों बोके तिल जब तुम खट्टे आम का बीज बोते हो तो उस के पेड़ से जितने आम होते हैं सब खट्टे होते। फिर मीठे आम के बीज से जो पेड़ होता उस में मीठे आम लगते हैं। वैसाही चिनिया बत्तक के अंडे से चिनिया बत्तक श्रोर राजहंस के अंडे से राजहंस होता है। लड़केबाले भी इसी नियम पर होते हैं। क्योंकि उन की देह माता पिता की देह से उत्पन्न होती है। इस लिये वे माता

पिता का स्वभाव पाते हैं। कभी कभी लड़केबाले पिता का चेहरा और माता का स्वभाव पाते हैं। फिर कभी कभी बच्चों की आंखें पिता की सी पर उन का रंग रूप माता का सा होता है।

लड़केबाले जो केवल रंग रूप में माता पिता के ऐसे होते सो नहीं पर उन का चंगा रहना वा रोगी होना भी माता पिता से है। माता पिता यदि भले चंगे न हों तो उन के बालबच्चे भी भले चंगे न होंगे। माता पिता यदि रोगी और दुर्बल हों तो उन के बालबच्चे भी वैसेही होते हैं। बालबच्चे भले चंगे जन्में इस लिये माता पिता को चंगे और हृष्टपुष्ट होना चाहिये। जो बचपन से हृष्टपुष्ट रहते हैं उन के बालबच्चे भी हृष्टपुष्ट होते हैं। क्योंकि बचपन में कुचाल चलने से उस का फल जवानी में भोगना पड़ता है। इस लिये तुम यदि हृष्टपुष्ट रहने का यत्न न करो वा किसी बुरी आदत में पड़ जाओ जिस से तुम्हारा शरीर टूट जाय तब जब तुम बड़े हो और तुम्हारे बालबच्चे हों तो तुम्हारे प्यारे बालबच्चे दुबले पतले और रोगी होंगे।

जैसा शरीर के विषय होता है वैसा बुद्धि के विषय में भी होता है। यह देखा जाता है कि बालबच्चे अपने माता पिता से बुद्धि पाते हैं क्योंकि बाजेवालों के लड़के अच्छी रीति से बाजा बजा सकते हैं और गानेहारों के लड़के गा सकते हैं और नरम मिजाज और दयालु स्त्रियों के बालबच्चे नरम मिजाज और दयावन्त होते हैं। कभी कभी दादा और दादी के दो एक गुण पोता पोती में दिखाई देते हैं।

तुम भले चंगे और भले स्वभाव के जन्मे थे क्योंकि तुम्हारे माता पिता ईश्वर का भय मानते थे। सो तुम उन के भले

स्वभाव और भले चालचलन के भागी हुए हो। फिर तुम्हारा चरित्र भी भला बना रहे तो तुम जब बड़े होगे तब तुम भले चंगे बने रहोगे और तुम्हारी बुद्धि तेज और तुम्हारा चरित्र निर्दोष रहेगा। फिर तुम्हारे बालबच्चे भी तुम्हारे भले चरित्र से लाभ उठावेंगे। सो यदि तुम नरम मिजाज दयावन्त और सच्चे हो तो तुम्हारे बालबच्चे भी वैसेही होंगे। पर यदि तुम कठोर हठी और झूठे हो तब तुम्हारे बालबच्चे भी वैसेही होंगे। तुम यदि आनन्द से अपने माता पिता की बातों को मानो और मन से ईश्वर की सेवा करो तब तुम्हारी बात मानना और ईश्वर की सेवा करना तुम्हारे बालबच्चों को सहज होगा।

बैबलशास्त्र में लिखा है कि कोई अपने लिये नहीं जीता और न अपने लिये मरता है। इस बात का अर्थ अब तुम कुछ कुछ समझे होगे। हम अपने बापदादों से शरीर और बुद्धि का बल पाते हैं और जो हमारे पीछे जन्मेंगे उन के बल और बुद्धि की जवाबदिही हम पर है।

तुम्हारे शरीर का बल और बुद्धि का तेज अच्छा है इस लिये घमण्ड मत करो पर नरम होओ। जिन लोगों ने अपने माता पिता से शरीर की वा बुद्धि की निर्बलता पाई है उन को तुच्छ जानना बड़ा पाप है। उन के दुःख में दुःखी होना चाहिये। यह भी स्मरण रखना चाहिये कि किसी के भाग की बातें उस के ललाट में लिखी नहीं रहतीं। क्योंकि जो हट्टे कट्टे जन्मते हैं वे भी बुरी आदत के कारण रोगी हो जाते हैं। फिर वे जिन की बुद्धि कम और दुबले पतले हैं वे यत्न करने से अपनी बुद्धि और बल बढ़ा लेते हैं। फिर ईश्वर हम लोगों का स्वर्गबासी पिता है। अपनी घटी

समझ बूझके जब लोग स्वर्गवासी पिता की सहायता चाहते हैं तो यदि उन्हों ने जगत के पिता से बुराई पाई हो पर स्वर्ग-बासी पिता से सो गुणा बढ़के भलाई पा सकते हैं। इस लिये बैबलशास्त्र में यह ईश्वर का बचन लिखा है कि तुम लोग यह कहावत कहते हो कि जंगली दाख खाते तो पुरखा लोग पर दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के यह कहावत कहने का अवसर फिर इस्राएल में (अर्थात ईश्वर के लोगों में) न मिलेगा। सुनो सभों के प्राण मेरे हैं जैसा पिता का प्राण मेरा है वैसा पुत्र का भी प्राण मेरा है।

ताः ७ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——

प्यारे ज्ञानीलाल।

तुम को स्मरण होगा कि कई एक बरस पहिले जब तुम मेरे घर आते थे तब तुम मेरी सोने की घड़ी देखना चाहते थे। जब तुम उस पर फूंकते थे तब मैं उस घड़ी की एक कल को टीप देता था और घड़ी का ढकना खुल जाता था तब तुम घड़ी के भीतर बहुत से चक्रों को चलते देखते थे पर पीछे घड़ी के बिगड़ जाने के डर से मैं घड़ी नहीं खोलने चाहता था। गरमी के दिनों में यदि वह घड़ी धीरे धीरे चलती वा जब जाड़े में तेज चलती तब मैं उस का दोष दूर करने के लिये उस के ढकने को खोलता था और अपनी सांस बन्द करके बड़े यत्न से उस का कांटा ठीक करके घड़ी को झट बन्द कर देता था।

मेरी घड़ी में यदि ऐसी कल होती जिस से वह कभी

कभी अपने आप अपनी ऐसी छोटी २ घड़ियों को उत्पन्न करती और वह घड़ियां धीरे २ बढ़के बड़ी हो जातीं और फिर अपनी नाईं छोटी २ घड़ियों को उत्पन्न कर सकतीं तब मैं उस कल को बिगड़ने से कैसे यत्न से बचाता और उस का बुरा व्यवहार कभी न करता ।

मैं अपनी घड़ी के साथ तुम्हारे शरीर का पटतर देता हूं । ईश्वर ने तुम्हारा चेहरा बड़ा सुन्दर बनाया है । तुम्हारे दान्त उजले और तुम्हारी मनभावनी आंखें और हंसमुख रूप देखके सब लोग आनन्द होते हैं । मेरी घड़ी के ढकने की नाईं तुम्हारा चेहरा भी लोगों के देखने की चीज़ है ।

घड़ी की जैसी शक्ति के बिषय में मैं ने तुम से कहा था ठीक वैसाही तुम्हारे लिंग की भी शक्ति है । मैं ने तीसरे माघ के पत्र में जिस नर गाछ की बात लिखी थी उस का पटतर तुम से दिया जा सकता है । वह जैसे फूल की धूल उत्पन्न करती है वैसाही कितने बरसों के पीछे तुम्हारे लिंग में बीर्य्य उत्पन्न होगा उसी बीर्य्य से तुम्हारे बालबच्चे उत्पन्न होंगे ।

बैबल शास्त्र में लिखा है कि हमारा शरीर ईश्वर का मन्दिर है । मन्दिर का तो हर एक अंग पवित्र होता है पर एक अंग दूसरे अंग से बढ़के पवित्र होता है । यिरूशलीम के मन्दिर के ओसारे में यज्ञवेदी थी । जो पाप का प्रायश्चित्त करते थे उन को उसी यज्ञवेदी तक जाने का अधिकार था । फिर पवित्र स्थान नाम एक कोठरी थी उस कोठरी में याजक को छोड़ दूसरे नहीं जाने पाते थे । पवित्र स्थान के भीतर महा पवित्र स्थान नाम एक और कोठरी थी वहां ईश्वर का तेज बिराजता रहता था । वहां केवल महायाजक बलिदान का लोहू लेके साल में एक बार जाता था ।

उस महा पवित्र स्थान से मैं जिस अंग का पटतर देने चाहता हूं सो तुम ने अब समझा होगा। जब शरीर ईश्वर का मन्दिर है तब लिंग शरीर का महा पवित्र स्थान है। क्योंकि दूसरे अंगों से बढ़के लिंग में सृजनहार की बड़ाई बहुत कुछ बिराजती रहती है क्योंकि उस के द्वारा बाल बच्चे होते हैं।

जिस भारी काम के लिये ईश्वर ने लिंग का सृजा है उस काम को पूरा करने के लिये उस का बड़े यत्न से रखना चाहिये। उसे किसी लड़के को मत दिखाना न उस को छूने देना और तुम भी यदि बड़ा प्रयोजन नहीं हो उसे मत छूना। फिर चैाकस रहो और अपने हाथ से उसे अपवित्र मत करो। क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि यदि कोई ईश्वर के मन्दिर को नाश करे तो ईश्वर उस को नाश करेगा।

लिंग का बुरा अभ्यास करना पाप है और लिंग को चैाकस होके बचाना चाहिये इन बातों को नहीं जानते बहुत लड़के हथरस करके अपने शरीर को अपवित्र करते हैं। इस लिये मैं अब इतना खोलके लिखता हूं।

इस बुरे अभ्यास में लड़के कैसे पड़ते हैं सो मैं अब बताता हूं। कभी २ अज्ञान नोकर चाकर लड़कों का अपनी कांख में दाबके वा कांधे चढ़ाके फिरते हैं इस से यह होता है कि लड़के का लिंग नोकर के शरीर से रगड़ खाता है और लड़के को सुख बोध होता है सो वह उस सुख के लिये अपने लिंग को रगड़ने लगता है। कभी २ घर की टहलनी जिस की चाल अच्छी नहीं लड़के को ठंढा करने के लिये हथरस करना सिखाती है। कभी २ नोकर चाकर को मजूरी काटने से वा उन्हें दण्ड देने से वे नोकर डाह से अपने स्वामी के छोटे

लड़के के छिप छिपके यह बुरा काम सिखाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि स्वामी के लड़के के कोमल मन में इस पाप की आग के जलाने से घर में आग लगाने से जितना नाश होता उस से हजार गुण बढ़के उस के स्वामी का नाश होगा। यह ठानके वे ऐसा काम करते हैं। फिर कभी २ साथ के पढ़नेहारे लड़के जब देखते हैं कि कोई लड़का बड़ा तेज है तो उस के हराने के मतलब से वे उसे यह बुरा काम सिखाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि यदि वह इस बुरे काम के सीख जाय तो आलसी हो जायगा और किसी परीक्षा में सफल होना उसे अन्होना होगा।

फिर कितने लड़के आपही आप इस बुरे अभ्यास में पड़ जाते हैं। क्योंकि लिंग के धो धाके साफ न रखने से वा पेट में कीड़े जन्मने से लिंग खुजलाता है। सो उसे खुजलाते २ वे इस बुरे अभ्यास के सीखते हैं।

तुम ऐसे बैरी और परीक्षा से घिरे हो यह जानके तुम्हारे माता पिता कितने बरसें से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर हमारे पुत्र के परीक्षा में मत डाल पर बुराई से बचा। वे जिस आशीर्बाद के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तुम के भी उस आशीर्बाद के पाने का यत्न करना चाहिये इस लिये तुम्हारे पिता ने मुझ से कहा कि मैं तुम्हें चिता दूं।

ताः ८ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री——

प्यारे ज्ञानीलाल।

ईश्वर सुखधाम है इस लिये जीवें के हर एक ठहराये हुए काम करने में दुःख नहीं पर सुख होता है उस ने इसी

रीति से सब जीवों को सृजा है। ईश्वर की इच्छा है कि हर एक जीव अपनी २ जाति के अनुसार जीव उत्पन्न करें। इस लिये उस ने जीव जन्माने का भी काम सुखदाई किया है। पर यह बात भी है कि जब हम खाते हैं वा दौड़धूप करते हैं तब हम सुख के साथ बल भी पाते हैं और भले चंगे रहते हैं। इस लिये खाने और चलने फिरने का सुख जब तब पा सकते हैं। लिंग के सुख के साथ बल नहीं होता न लोग चंगा रह सकते हैं पर उस से नस २ और सारा शरीर दुर्ब्बल होता है। तब ईश्वर की यह इच्छा है कि जीव बच्चे जन्माने के समय को छोड़ दूसरे समय इस सुख को पाने की इच्छा न करें।

सब जीव सुख के खोजी हैं। मनुष्य को छोड़ और जीव केवल शारीरिक सुख के खोज में रहते हैं। शारीरिक सुख से बढ़के और सुख है उस को जानने वा पाने की शक्ति उन में नहीं है। सो सुख के खोज में वे अपना नाश मारें इस लिये ईश्वर ने नीच जीवों के लिंग को ऐसी जगह में रखा है कि वे उसे रगड़ नहीं सकते।

मनुष्य के लिये ईश्वर ने दूसरा नियम ठहराया है। उस ने हम लोगों को आत्मा दिया है आतमा यदि नहीं रहता तो हम भी नीच जीवों की नाईं थोड़ी देर के सुख के लिये इधर उधर मारे फिरते। पर हम को आत्मा है इस लिये हम इस दशा में नहीं पड़ते। उस आत्मा के द्वारा हम जानते हैं कि ईश्वर है और उस से हम मिल सकते हैं और उस को प्रेम करके उस की आज्ञाओं पर चल सकते हैं। आत्मा के द्वारा जो हम केवल ईश्वर के साथ मिल सकते हैं सो नहीं पर आत्मा हम को भला बुरा न्याय अन्याय का भेद बताता

है और कहता है कि भलाई और न्याय को साधो और बुराई और अन्याय को छोड़ो।

आत्मा से बैरी बढ़के बल तो रखता है पर ईश्वर हमारे आत्मा की सहायता करने को तैयार है। सो जब सुख भोग करने की इच्छा तेज भी हो तो उसे दबाना चाहिये। उस को दबाने से हम को उत्तम फल मिलेगा क्योंकि शरीर के सुख से आत्मा का सुख भला और टिकाऊ है। हम बैबल शास्त्र को पढ़के जान सकते हैं कि हम को कौन से काम करना चाहिये। हम यदि ईश्वर से बल पाके उचित कामों को करें तब हमारे मन में ईश्वर का आशीर्बाद होगा और बड़ी शान्ति पावेंगे। पर यदि हम सुख के लिये जान सुनके बुरा काम करें तो ईश्वर भय दिखाके हमें डांटेगा।

बैबलशास्त्र में ईश्वर ने ब्यभिचार करना मना किया है और उस के बुरे फल का दृष्टान्त भी दिया है।

ईश्वर की आज्ञा को टालके जो सुख भोग करने चाहते हैं वे थोड़ी देर तक तो एक प्रकार का सुख पाते हैं पर अन्त में वे अपने २ आत्मा मन और शरीर में भयंकर दण्ड पाते हैं।

तुम लोग कभी २ खेल के समय हाथ पांव पर चलते हो। उस समय यह बात सूझ जाती है कि मनुष्य के शरीर की बनावट कहां तक पशु की सी है। पर सोचकर देखो कि पशु के अगले पांव से मनुष्य के हाथ कितने उत्तम हैं। उन के नख और खुर से मनुष्य की अंगुलियां कितने काम की हैं। ईश्वर ने जो मनुष्य को हाथ दिया है उस से मनुष्य को बहुत सुभीता होता है। वह अपने हाथ से बहुत तरह की खाने की चीज़ पहिरावा और कल बना सकता है। हाथ

यदि नहीं होता तो हम पशु के से रहते। पर बहुतेरे ईश्वर के दिये हुए हाथ को जो ईश्वर का आशीर्वाद है बुरे काम में लगाते हैं। कोई जाल करता है कोई चोरी करता है कोई खून करता है और कोई २ ऐसे नीच हैं कि वे अपवित्र मन से हथरस करते और ईश्वर के मन्दिर को अपवित्र करते हैं।

ईश्वर ने तुम को अच्छा हाथ दिया है सो तुम बुरा काम न करके ईश्वर के दास होने का यत्न करो। एक बात और लिखके इस पत्र को समाप्त करूंगा। आंख और कान हमारे शरीर रूपी मन्दिर के दो बड़े द्वार हैं। तुम यदि ईश्वर के मन्दिर को पवित्र रखना चाहो तो इन दो द्वारों की चौकसी से रखवाली करना होगा। जिस में लिंग दूल्हा दुलिहन वा बिवाह का नाम सुनके काम की आग सुलगे वैसे पुस्तकों को न पढ़ना वैसी तसवीर न देखना और वैसी बातें न सुनना।

हथरस करने से जो बड़ी भारी बुराई होती है उस के विषय में मैं तुम को कल पत्र लिखूंगा।

ता: ९ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——

प्यारे ज्ञानीलाल।

मैं समझता हूं कि तुम ने कभी अपवित्र खेल नहीं किया है। तौभी तुम जान रखो कि तुम्हारी चारों ओर बुराई घिरी हुई है और कोई न कोई तुम्हें बुराई में गिराने का यत्न करेगा इस लिये मैं तुम को ज्ञान रूपी ढाल देता हूं कि जब दुष्टात्मा तुम पर चढ़ाई करे तब तुम इस को काम में लाके उस से बचो। चिता देना बड़ा दरकार है क्योंकि इस

पाप का बुरा फल पहिले पहिल दिखाई तो नहीं देता पर बहुत देर में जब आदत बैठ जाती है तब दिखाई देता है। फिर जब जवान लोग बुरी आदत की जंजीर में जकड़ जाते हैं तो यदि उस के बुरे फल को भी देखें तौभी अपनी बुरी आदत को छोड़ नहीं सकते।

अब मैं तुम्हें बताता हूं कि हथरस करने की जो बुरी आदत है उस में कैसे २ बुरे फल होते हैं।

१ इस पाप से हमारे आत्मा की बड़ी भारी बुराई होती है। हमारा आतमा ईश्वर का भक्त और शरीर का मालिक हो इस लिये ईश्वर ने उस को सृजा है। लिंग के साथ खेल करना पाप है यह बात नहीं समझने बूझने के कारण बहुतेरे इस बुरी आदत में पड़ते हैं। वे ईश्वर के नियम को नहीं मानते यह बात जब पीछे उन्हें जान पड़ती है तब उन का मन उन को दोषी ठहराने लगता है। सो यदि वे ईश्वर को अप्रसन्न करने से डरें और उस बुरी आदत को छोड़ दें तब उन का भला होता है। पर बहुत से ऐसे हैं जो ईश्वर का भय नहीं मानते और छिप छिपके पाप करते हैं। इस रीति से ईश्वर का अनादर करने से वे काम के बश हो जाते हैं और उन का आतमा ईश्वर की सहायता नहीं लेता इस लिये वह धीरे २ दुर्बल हो जाता। तब वे अपने मन की भली शिक्षा को नहीं सुनते। उस समय शैतान सुभीता पाके आता है और ईश्वर के बिरुद्ध बहुत सी बुरी बातें उन के मन में डालता है। जो लोग शैतान की बातें मानते हैं वे ईश्वर के आतमा को यहां लों दुःख देते हैं कि वह उन्हें छोड़के चला जाता। तब वे होय तो नास्तिक हो जाते और नहीं तो अपवित्र देवता देवी को अपने मन में गढ़के उन की पूजा

करने लगते हैं। इस रीति से वे अपने आत्मा को मानो राख खिलाते और आत्मा की ज्योति के लिये अन्धकार और आत्मा की शान्ति के लिये लाज और भय अपने पर लाते हैं।

२ इस पाप से चरित्र बिगड़ता है।

इस पाप की आदत पड़ जाने से पहिले तो ईश्वर की प्रीति जाती रहती फिर गुरु और साथ के पढ़नेहारों की और अन्त में माता पिता भाई बहिन की प्रीति नहीं रहती। जो लड़का पहिले बात मानता था और मेहनती सीधा सच्चा था और आनन्द रहता था वह बात २ में क्रोध करनेहारा आलसी ढीठ और आशारहित हो जाता है। यहां लों कि वह माता पिता को भी अपना बैरी समझने लगता है।

३ इस पाप से बुद्धि और नश का बल हट जाता है।

तुम ने कभी कलकत्ते की बड़ी टेलिग्राफ आफिस को देखा है। उस आफिस में बहुत से तार हिन्दुस्थान की चारों ओर से खबर लाते हैं और सर्कार की आज्ञाओं को चारों ओर पहुंचाते हैं। हमारे शरीर में जो भेजे की कोठरी है वह मानो बड़ी टेलिग्राफ आफिस है नसें आंख कान नाक जीभ और चाम वहां खबर पहुंचाती हैं और फिर वहां से हमारी इच्छा को हर एक अंग में पहुंचाती हैं।

लिंग में बहुत सी नसें हैं और उन को रगड़ने से वे तेज हो उठती हैं उस से एक प्रकार का सुख होता है। पर जैसे रास्ते में चलते २ लोग तौराके गिर जाते हैं वैसाही लिंग की नसें भी खिंच जाती हैं। तब वह शक्तिहीन होके गिर पड़ता और सुख का अन्त होता है।

गुल्ली डण्डा खेलने से तुम्हारे बांह की पिण्डली पुष्ट होती है और दौड़धूप करने से तुम्हारे पांव की पिण्डली का

मांस पुष्ट होता है लिंग में नसें तो बहुत हैं पर मांस की पिंडली कम हैं। काम में लाने से वह नसें नहीं पुष्ट होतीं पर बहुत व्यवहार करने से उन का बल छूट जाता है। लिंग की नसों के साथ भेजे की नसों और दूसरी नसों का बड़ा लगाव है। सो यदि लिंग की नसें बार २ निसक हों तो केवल लिंग नहीं पर तुम्हारा सारा शरीर और भेजा निर्बल होगा और तुम्हारी बुद्धि और स्मरण शक्ति छूट जायेंगी। तब तुम किसी पुस्तक को पढ़के आगे की नाईं उस का अर्थ नहीं समझ सकोगे और यदि थोड़ा बहुत अर्थ लगा भी लो तौभी आगे की नाईं उसे याद न रख सकोगे। परीक्षा में तुम प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकोगे सो तुम लज्जित होगे और तुम्हारे माता पिता मन मारके बैठ रहेंगे।

जो लोग इस बुरी आदत को बहुत काम में लाते उन का भेजा यहां लों बिगड़ जाता कि वे पागल हो जाते हैं और पागलगारद में रखे जाते।

४ यह पाप शरीर का नाश मारता है।

जो लोग इस बुरी आदत में पड़ जाते हैं धीरे २ आंखों की ज्योति खोते और अन्न उन के पेट में नहीं पचता पीठ में दर्द होता सारा शरीर ढया जाता है और किसी काम को करने में उन का मन नहीं लगता। उन का शरीर दिन २ दुबला पतला होता जाता है और उन्हें कास रोग होता है जिस से वे बहुधा मर जाते हैं।

बड़े शोक की बात है कि इस बुरी आदत के बैठ जाने से आत्मा और मन के साथ २ उन की इच्छा शक्ति भी दुर्बल हो जाती है। इस लिये वे जब अन्त में समझ जाते हैं कि इस आदत में पड़ने से उन का सर्बनाश होता है तब वे इच्छा

तो करते हैं पर इस आदत को छोड़ नहीं सकते। इस प्रकार के लड़कों के पालनेहारे कभी २ रात को उन के हाथों को जंजीर से जकड़के उन के गलों से बांध देते हैं कि वे छुपरस न कर सकें। पर सचमुच बिना ईश्वर की सहायता के कोई इस बुरी आदत से छुटकारा नहीं पा सकता।

५ इस बुरी आदत में पड़ जाने से उन के अपने लोगों को बड़ा दुःख होता है।

अकेला निराले में इस पाप को करने से केवल पाप करनेहारे दण्ड के भागी नहीं होते। उन से बढ़के उन के माता पिता को लाज और दुःख होता है। तुम्हारे लिये तुम्हारे माता पिता ने जो किया है सो याद करो। तुम्हारी माता ने बहुत दुःख उठाके तुम को जन्माया। फिर जब तुम नन्हे बच्चे थे तब उस ने तुम्हारी बड़ी सेवा और रखवाली किई। जब तुम को गोटी निकली थी तुम्हारे माता पिता ने तुम्हारे लिये कितना कष्ट उठाया और दुःख सहा। उन लोगों ने तुम्हारे आराम सुख के और लिखाने पढ़ाने के लिये जितना उन से बन सका खर्च किया और खर्च करने से अपना हाथ न रोका। फिर वे बिपत्ति और बुरी संगत से तुम को बचाने के लिये बराबर चौकस रहे। वे यदि देखें कि उन का प्यारा पुत्र किसी बुरी आदत में पड़के जैसी उन की आशा थी वैसा न होके हर दिन रोगी निकम्मा और ईश्वर से दूर होता जाता है तब उन के मन में कैसी चोट लगेगी।

तुम्हारी छोटी बहिन जब बड़ी होगी और तुम्हारे पास भले उपदेश और सहायता के लिये आवेगी तब यदि वह तुम को कुचाली आलसी डरपोक और दुर्बल देखे तो वह कैसी लज्जित होगी। फिर तुम्हारे लिये ईश्वर जो एक

भली कन्या को तैयार कर रहा है कि वह तुम्हारे साथ रहै और तुम्हारी स्त्री होवे सो यदि तुम्हारा चालचलन पवित्र न होवे तो तुम कैसे उस के साथ मान आदर और चैन के साथ रह सकते हो।

जो अपनी बाड़ी में कीकर लगाते हैं उन को कभी आम उस पेड़ से खाने को नहीं मिलता। वैसाही तुम्हारे लड़कपन की बुरी आदत के कारण पिता के बीर्य्य के बिगड़ने से उस के बच्चे शरीर के रोगी बुद्धि के हीन और बुरे चरित्र के होंगे। जो छोटे २ लड़का लड़की अब पाठशाला में पढ़ते हैं उन की समझ बूझ इच्छा आशा और आदत पर उस जाति के लोगों की बढ़ती वा घटती होती है।

मैं और किसी बात से सन्तुष्ट नहीं हो सकता। मेरी बड़ी इच्छा है कि हर एक लड़का इन बातों को समझ बूझके प्रार्थना के साथ इन बातों पर मन लगावे।

१ उस के बालबच्चे हृष्ट पुष्ट जन्में इस लिये ईश्वर की सहायता से अपने को बुरी आदत से बचावे।

२ उस के बालबच्चे उस से भी बढ़के बुद्धि और स्मरण शक्ति पावें इस लिये वह ईश्वर की सहायता मांगे कि उस के सोच बिचार पवित्र बने रहें।

३ उस के बालबच्चे सच्चाई पर चलनेहारे और ईश्वरभक्त हों इस लिये वह ईश्वर की सहायता चाहे कि वह धर्म्म पर चले।

तुम किस रीति से शरीर में बल रख सक्ते और पवित्र हो सक्ते हो वह बात मैं कल के पत्र में लिखूंगा।

ता: १० माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ———

प्यारे ज्ञानीलाल ।

तुम किस रीति से अपने शरीर के बल को बचा सकते हो और अपने को पवित्र रख सकते हो उस विषय में मैं आज तुम को बताऊंगा। जो मैं अब लिखता हूं सो तुम ने अपने माता पिता से सुना होगा। पर तुम किसी लाभदाई बात को भूल न जाओ इस लिये मैं उसे तुम्हें याद दिलाता हूं। चूल्हे के साथ हमारे शरीर का पटतर दिया जा सकता है। शरीर रूपी चूल्हे में जीवनरूपी आग जलती है।

टहलनी यदि चूल्हे में लकड़ी लगाती न जावे तो आग बुत जायगी। उसी रीति से यदि हम ठीक भोजन न खावें तो हमारी मृत्यु होगी।

ईश्वर ने अपनी दया से बहुत प्रकार की भोजन वस्तु हमारे लिये दिई हैं। उन को खाके हम लोगों को सुख होता है। पर लोग चूल्हा इस लिये नहीं बनाते कि उस में लकड़ी वा कोयला जलाते रहें। वैसाही खाने का अभिप्राय यह नहीं है कि केवल खाने का सुख भोग करें। यह तो सच है कि सूअर गाय और नीच जीव केवल खाने का सुख पाने के लिये खाते हैं। पर हम नहीं चाहते कि हमारी बुरी आदत के कारण कोई हम को पशु से पटतर देवे। रसोई बनाने वा पानी वा दूध गरम करने के लिये टहलनी चूल्हा सुलगाती है वैसाही काम करने का बल पाने के लिये हम भोजन करते हैं।

टहलनी यदि लकड़ी और कोयला के बदले चूल्हे में ईंट वा मिट्टी दे तब चूल्हे की आग घट जाती और बुझ जाती है। जो भोजन जल्दी नहीं पचता उस भोजन को खाने से

पेट की आग घटती है और हम दुर्बल हो जाते। आलसी हो जाते सिर में दर्द होता और काम करने की शक्ति जाती रहती। ऐसे रोग होने से छः सात घंटे के भीतर जो कुछ खाया है उस को याद करके उस पर सोचना चाहिये और यदि समझ में आवे कि किस भोजन बस्तु के खाने से ऐसी दशा हुई है तो उस को फिर न खाना चाहिये। फिर बहुत बार हम देखते हैं कि एक मनुष्य एक भोजन बस्तु को अच्छा समझता और दूसरा उसे खा नहीं सकता। हम लोग कभी २ वैसी चीज खा जाते हैं जो नहीं पचती। जो मूर्ख हैं सो चेत नहीं करते वा उन को वह चीज अच्छी लगती है इस लिये उसे बार २ खाते हैं और रोगी होते। पर जो ज्ञानी हैं वे वैसी चीज दूसरी बार नहीं खाते।

जल दूध टटका खजूर का रस इत्यादि बहुत सी पीने की चीज शरीर के लिये लाभदाई हैं। पर सड़ा फल खाने से जैसे पेट भारी होता वैसे ही खजूर के सड़े रस अर्थात ताड़ी को पीने से बुद्धि नाश होती है। अंग्रेजी वा देशी शराब सड़े रस हैं क्योंकि वे सड़े फल वा अन्न से बनाई जाती हैं और बुद्धि की नाश करनेहारी हैं। इन को पीने से लोग मतवाले होते हैं तब उन्हें एक प्रकार का आनन्द होता है फिर वे निर्लज्ज होके गपें हांकने लगते हैं वा अपने मन का भेद बताने लगते हैं वा क्रोध में आके लोगों से लड़ने लगते हैं। जब मतवालों का नशा उतर जाता है और वे होश में आते हैं तब उन के सिर में दर्द होता मुंह का स्वाद बिगड़ जाता और अपने नशे की दशा को सोचके वे बड़े दुःखित होते हैं।

कोई मतवालों का बिश्वास वा आदर नहीं करता। शराब

पीते पीते वे कंगाल हो जाते। बहुत लोग दूसरों के कहने पर वा उस का स्वाद चीखने के लिये पहिले थोड़ी थोड़ी शराब पीना सीखते हैं और अन्त में पक्के शराबी हो जाते हैं। पर जो लोग शराब नहीं पीते वे कभी मतवाले नहीं होते।

मैं चाहता हूं कि तुम किस लिये खाते हो यह समझके और ईश्वर का धन्यवाद मानके उस की महिमा के लिये खाया पिया करो।

चूल्हे में लकड़ी जलाने के लिये जैसे हवा का दर्कार है हमारी जीवनरूपी आग के लिये भी वैसाही हवा का दर्कार है। चूल्हा बनाने के समय टहलनी दो छेद रखती है एक हांडी रखने के लिये और दूसरा चूल्हे में हवा जाने के लिये। वैसाही हमारे शरीर में भी ईश्वर ने खाने के लिये मुंह और हवा भीतर जाने के लिये नाक दिई है। ईश्वर का अभिप्राय जानके हम को नाक ही से सांस लेना चाहिये। तब हम बहुत रोगों से बच जावेंगे।

नाक के भीतर बाल है। सो सांस लेने के साथ धूल भीतर फेफड़े में जाके उसे न बिगाड़े इस लिये भीतर जानेवाली हवा को वह बाल मानो छांक लेता है। तुम ने सुना होगा कि गोटी निकलने के रोग के हैजा के वा दूसरे रोग के बीज हवा के साथ उड़ते हैं। जब रोग के बीज किसी के फेफड़े में जाते हैं तो वह रोग उसे हो जाता है। इस को रोकने के लिये ईश्वर ने हमारी नाक के पीछे स्पंज की नाईं एक चीज दिई है। इस में बहुत रोगों के बीज अटकके रह जाते हैं। सो नाक से सांस लेने से उस रोग के बीज से कुछ हानि नहीं होती। फिर जो लोग मुंह खोलके सांस लेते हैं तब ठण्ड के दिनों में ठण्डी हवा उन के फेफड़े में पहुंचती है

उस से सर्दी खांसी और दूसरे रोग भी होते हैं। पर ठण्ड के दिनों में भी यदि हम नाक से सांस लेवें तब किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। क्योंकि नाक में होके हवा जाते २ कुछ गरम हो जाती है।

देखो ईश्वर कैसा सुख का दाता है। अब हम को धीरे धीरे बोध होता जाता है कि ईश्वर के नियमों पर चलने से हमारा भला होता है और उस से भटक जाने से हम को बड़े दुःख और कष्ट में पड़ना होता है।

सांस खींचने से हवा फेफड़े के बीच लोहू से मिल जाती है। लोहू बिगड़ा रहने से हवा उस दोष को खींच लेती है। यह यदि खींची न जाय तो सिर में दर्द गांठ गांठ में दर्द और दूसरे रोग भी होते हैं। कितने लोग ऐसा रोग होने से दवा खाने लगते हैं। चूल्हे के दृष्टान्त से दवा से बढ़के हम दूसरा उपाय सीख सकते हैं।

चूल्हे में लकड़ी जब अच्छी रीति से नहीं जलती तब बड़ा धूआं होता है और तब बहुत हवा का दर्कार होता है। बहुत हवा पाने से आग जल उठती और धूआं होना बन्द हो जाता। वैसा ही जब तुम्हारा शरीर ढया जावे और भारी हो तो तुम को समझ जाना चाहिये कि तुम्हारे फेफड़े में कम हवा जाती है इस लिये तुम्हारी जीवनरूपी आग अच्छी रीति से नहीं जलती। तब तुम को चाहिये कि साफ हवा में नाक से लम्बी सांस लिया करो। सो यदि तुम हर दिन दो तीन बार नाक से लंबी सांस लेकर अपने फेफड़े में भरो और धीरे धीरे मुंह से उस हवा को निकाल दो तो इस आदत के पड़ जाने से आप से आप तुम लम्बी सांस लिया करोगे और तुम्हारा लोहू साफ हो जायगा।

लम्बी सांस लेने का एक और कारण है। इस बात को समझाने के लिये तुम को फेफड़े की बनावट पहिले बताना होगा। मान लो कि तुम ने इमली का गाछ काटके उसे उलटके रखा है। तुम्हारे फेफड़े का वैसाही रूप है। गाछ की जड़ की नाईं तुम्हारे फेफड़े का एक बड़ा नल तुम्हारी नाक और मुंह से लगा है। फिर गाछ की जड़ से बड़ी डाल और फिर उस में से छोटी छोटी डालें और फिर पत्ते होते हैं वैसे फेफड़े के बड़े नल के नीचे की दो डालों से कितने छोटे छोटे नल निकले हैं और पतली डालों और पत्तों की नाईं पतले पतले नल हैं। कसके सांस लेने से फेफड़े की चारों ओर पतले पतले नलों तक हवा पहुंचती है। पर जब हम धीरे धीरे सांस खींचते हैं तब हवा केवल बड़े बड़े नलों में जाती है पतले नलों में नहीं पहुंचती।

पिछले महीने में जब मैं तुम्हारे पिता के जन्मदिन में तुम्हारे घर गया था तब तुम कुछ लिख रहे थे। मैं ने देखा कि तुम अपना सिर बहुत नवाये हुए हो और तुम्हारी दोनों बाहें बहुत निकट थीं। तब तुम को देखते ही मेरे मन में हुआ मैं ने जो इमली गाछ की बड़ी डालों के विषय फेफड़े का पटतर दिया केवल उन्हीं बड़े नलों में तुम्हारे सांस की हवा पहुंचती थी। और जो तुम्हारे फेफड़े के छोटे छोटे और पतले पतले नल थे उस में सांस की हवा नहीं पहुंचती थी। सो मैं ने तुम्हारे सिर पर अपना हाथ रखके तुम से कहा कि सिर उठाओ पीठ सीधी करो और कसके सांस लो। तुम को तो यह बात याद होगी। मैं ने तुम को क्यों सीधा होके बैठने कहा। उस का कारण यह है कि शरीर का कोई अंग यदि काम में लाया न जावे तो उस में जैसा चाहिये

लोहू नहीं चलता। सो वह अंग दुर्बल होता और उस में रोग जन्मता है। कास रोग नहीं होवे इस लिये उचित है कि कसके सांस लेना चाहिये जिस में पतले २ नलों में भी हवा पहुंचे।

चूल्हा के साथ शरीर का पटतर और एक बात में भी दिया जा सकता है। जो लकड़ी चूल्हे में जलाई जाती है उस का एक भाग धूआं होके उड़ जाता और दूसरा भाग राख हो जाता है। चूल्हे से राख उठाके हर दिन फेंक देना पड़ता है नहीं तो राख से चूल्हा भर जाता और हवा का रोक होता है और लकड़ी अच्छी रीति से नहीं जलती। वैसा ही जो हम खाते हैं उस का एक भाग सांस और पसीना होके उड़ जाता है पर दूसरा भाग पेट में रह जाता है। सोने के पहिले और जाग उठने पर और दिन में चार पांच घंटे में एक २ बार पेशाब करना चाहिये और दिन भर में एक बार पैखाना फिरना चाहिये। ऐसा नहीं करने से लोहू बिगड़ता है तब शरीर भारी होता और यदि पेट में कीड़े हों तो वे बहुत बढ़ जाते हैं। हर दिन ठहराये हुए समय पर पैखाना फिरने से तुम भले चंगे रहोगे।

तुम्हारा शरीर ईश्वर का है सो जिस से तुम्हारे शरीर की हानि वा लाभ होता है उन बातों को सोच बिचारके करना चाहिये। शरीर और चूल्हा दोनों अलग २ बस्तु हैं। केवल मैं ने चूल्हे के साथ शरीर का पटतर दिया है। देखो कैसे शोक की बात है कि लड़के लोग सिगरेट पीते हैं वे अपने २ मुंह को मानो चूल्हा बनाते हैं। सिगरेट पीने से बहुत हानि होती है। वे मुंह से सांस लेने को सीखते हैं। सिगरेट के धूआं से उन का फेफड़ा मैला हो जाता है सो

उन का लोहू जैसा चाहिये साफ नहीं हो सकता। इस से बढ़के उन की एक और हानि होती है। तम्बाकू में निकटिन नाम एक जान मारनेहारा विष है। वह मुंह से भीतर जाके पेट कलेजे भेजे और नसों में हानि करता है। यहां लों कि बहुतों को अजीर्ण रोग हो जाता है कितने मेहनत का काम कर नहीं सकते यदि करें तो कलेजे के रोग से मरते हैं। सिगरेट पीने से बहुतों का भेजा और नसें इतनी दुर्बल हो जाती हैं कि उन को जैसी चाहिये नींद नहीं होती सो वे आलसी और निकम्मे हो जाते हैं।

सिगरेट से जितनी बड़े लोगों की हानि होती उस से बढ़के लड़कों की हानि होती है। यह बात लड़के सहज में बिश्वास नहीं करते इस लिये मैं इस बात को कई एक दृष्टान्त देके बताता हूं।

पकाई हुई ईंट को पानी में डाल देने से वह नहीं गल जाती पर कच्ची ईंट पानी में पड़तही गलती है। वैसाही बड़े बूढ़े जो सह लेते हैं लड़कों का कोमल शरीर उस से नाश हो जाता है। तुम्हारे माता पिता मांस खाते हैं और तुम्हारी छोटी बहिन जो वही मांस खावे तो वह मर जायगी। जिस घर में लोगों को गोटी निकली है वहां यदि तुम्हारे माता पिता जांय तो उन को वह रोग नहीं भी लगेगा पर यदि तुम उस घर में जाओ तो तुम्हें वह रोग लग सकता है। पुराने सिपाही जितना दुःख सह सकते हैं जवान लोग उतना सह नहीं सकते। वैसाही सिगरेट पीने से बड़े बूढ़े लोगों की उतनी हानि नहीं होती पर लड़कों की दश गुन अधिक हानि होती है। स्कूल के लड़के जब सिगरेट पीने लगते हैं तो उन के शिक्षक निराश होते हैं। वे जानते हैं कि जो

लड़के सिगरेट पीते हैं वे परीक्षा में प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते और हर दिन के पाठ को भी याद नहीं कर सकते। सिगरेट से लड़कों की इतनी बड़ी हानि होती है कि मार्किन देश में लड़कों के हाथ सिगरेट बेचना वहां की सर्कार की ओर से मना किया हुआ है।

जो लोग तम्बाकू पीते हैं उन को ऊपर लिखी हुई हानियों के सिवाय बहुत असुभीता और दुःख उठाना पड़ता है। क्योंकि जब उन्हें तम्बाकू पीने को नहीं मिलता तब वे दुःखी होते और छटपट करते हैं।

ईश्वर ने तुम को बहुत प्रकार का सुख और आशीर्वाद दिया है। मैं आशा करता हूं कि जिन बुरी चीजों को तुम्हें ईश्वर ने काम में लाने के लिये नहीं दिईं तुम उन का लालच न करोगे।

कल मैं तुम को खेल काम और नींद के विषय में लिखूंगा।
ताः ११ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

ओ ———

प्यारे ज्ञानीलाल।

तुम को मैं बराबर देखता हूं कि तुम अपनी माता और टहलनी की सहायता किया करते हो इस से मैं बड़ा प्रसन्न हूं। फिर मैं समझता हूं कि तुम अच्छे बुद्धिमान बालक हो और अपने जीवन भर दूसरों का उपकार करोगे। कभी २ खेलना कूदना शरीर मन और आत्मा के लिये तो भला है पर सदा खेल में लगा रहना बुरा है। ऐसे बहुत लड़के हैं जो गुल्ली डण्डा गेंद और गबड्डा खेलने में तो बड़ी मेहनत

करते हैं पर माता पिता की सहायता किसी काम में यदि करनी हो तो उन को दुःख लगता है। इस से उन के स्वभाव का दोष दिखाई देता है। क्योंकि यदि वे अपने उचित काम को समझते तो उन को जितना आनन्द खेल में होता उस से बढ़के माता पिता वा दूसरे लोगों की सहायता करने में वे आनन्दित होते।

जो लोग जीवन के हर क्षण को फलदायक करना चाहते हैं वे लोग जैसी आशा करते सो पूरी नहीं पड़ती। इस का कारण यह है कि उन को किस नियम पर काम करना चाहिये वे नहीं जानते। तुम ने स्कूल में देखा होगा कि जब तुम हिसाब बनाते २ थक जाते तब इतिहास पढ़ने में आराम लगता है। और जब इतिहास पढ़ने में मन नहीं लगता तब तुम को कुछ लिखना अच्छा लगता है। उसी रीति से किसान जब हल चलाते २ थक जाता तब जाल बिनके वा गाड़ी हांकके आराम पाता है।

इंगलिस्तान में जब रेलगाड़ी नहीं थी तब एक नगर से दूसरे नगर जाने के लिये घोड़ागाड़ी थी जो ठहराये हुए समय पर छूटती थी। उन गाड़ियों के मालिकों ने देखा कि ठहराये हुए रास्ते में जब दो एक पहाड़ियां पड़ें तो घोड़े खूब चलते थे पर चौरस रास्ते पर घोड़े जल्दी थक जाते थे और काम के नहीं रहते थे। क्योंकि चौरस रास्ते पर घोड़े के पांव की एक पिण्डली पर भार पड़ता और पहाड़ चढ़ने से दूसरी पिण्डली और पहाड़ से उतरने पर तीसरी पिण्डली काम में आती थी। सो जो रास्ता पहाड़ पर होके जाता था उस में एका एकी तीनों पिण्डलियां काम में आती थीं पर चौरस रास्ते पर घोड़े के पांव की एक ही पिण्डली काम

में आती और दूसरी दो पिगडलियां कुछ भी काम नहीं आतीं। इस नियम के अनुसार तुम अपने काम को यदि बदलते रहो तो तुम आराम और आनन्द के साथ दुगना काम कर सकोगे।

फिर बड़े लोगों के लिये आठ घंटे की नींद बस है। पर लड़कों को दश घंटे की नींद का दरकार है। मैं तुम्हें कहता हूं कि आठ बजे संध्या को सोओ और भोर को छः बजे उठा करो। क्योंकि दिया की ज्योति में पढ़ने से सूर्य्य की ज्योति में पढ़ना आंखों के लिये अच्छा है। फिर दो पहर रात के पहिले जो नींद होती है वह पिछली रात की नींद से दुगुणा आराम देती है और निरोग रखती है। सोने के समय मुंह ढांकके मत सोओ। क्योंकि मुंह ढांकके सोने से तुम्हारे शरीर से जो बिगड़ी हवा निकलेगी वह सारी रात तुम्हारे फेफड़े में पहुंचेगी। वह मैली हवा तुम्हारे लोहू को साफ नहीं करेगी पर उसे और भी मैला करेगा। सो मुंह ढांकके सोने से भोर को तुम्हें आलस लगेगा और तुम्हारा शरीर भारी होगा।

ताः १२ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——

प्यारे ज्ञानीलाल।

तुम्हारे अच्छे चाल चलन को देखके मैं समझता हूं कि तुम्हारा मन और बिचार भी अच्छा होगा तौभी जिस में तुम्हारे मन की पवित्रता बनी रहे इस लिये तुम को चिता देना मैं अच्छा समझता हूं क्योंकि ईश्वर पवित्र मन को प्यार करता है। जैसे हाथ से बुरा काम करना अच्छा नहीं वैसे

मन में बुरी इच्छा वा बिचार रखना अच्छा नहीं पर नाश का कारण होता है ।

यह बड़ा आवश्यक है कि तुम्हारा मन पवित्र बना रहे । लाज तो आती है पर तुम को बता देना चाहता हूं कि बुरे लोग लड़कों के पवित्र मन को अपवित्र करने का यत्न करते हैं । ऐसे बिगाड़ू लोगों के अस्त्र बुरी तसवीरें और बुरी बातें हैं । चौकस न रहने से तुम उन के अस्त्रों से घायल हो सकते हो ।

बुरी बातें सुन्ने से वा बुरी तसवीरें देखने से हमारी स्मरण शक्ति और बिचार अपवित्र होते हैं । एक बार बुरी तसवीर को देखने से उसे लोग जल्दी भूल नहीं सकते फिर बात तो यह है कि जितना उसे भूलना चाहो उतना वह और भी याद आती है । एक कथा लिखता हूं उस से तुम मन की इस वृत्ति को समझ सकोगे। एक फकीर ने किसी बेवा के घर जाके उस से कहा मैं एक मंत्र जानता हूं उस को पढ़ने से पीतल सोना हो जाता है । तू यदि मुझे अस्सी रुपये देवे तो मैं तुझ को वह मंत्र सिखा दूंगा । बेवा ने फकीर की बात सुनके बड़ा अचरज माना और अस्सी रुपये देके उस फकीर से उस मंत्र को सीखा । बिदा होने के समय फकीर ने कहा कि मैं एक बात बोलने को भूल गया मंत्र पढ़ने के समय यदि काली बकरी याद पड़े तब मंत्र नहीं फलेगा । फकीर जब चला गया तब वह बेवा पीतल के बर्तनों को निकालके मंत्र पढ़ने लगी पर उस को बराबर काली बकरी याद पड़ा करती थी ।

यह बात सच है कि हम अपनी इच्छा से किसी बात को भूल नहीं जा सकते । पर इस विषय में जो हम सम्पूर्ण लाचार हैं सो बात नहीं है । हमारा मन यदि भली बातों

से भरा रहे तब कोई बुरी बात हमारे मन में घुस न सकेगी। इस लिये मैं कहता हूं कि तुम भले लोगों के साथ सत्संग किया करो और भली २ पुस्तकों को पढ़ा करो और उन का अर्थ समझने और याद रखने का यत्न करो। तब तुम्हारे मन में बुरी इच्छा और बुरा सोच बिचार नहीं आवेगा।

तुम्हारा मन यदि विद्या से भर जावे तो तुम भले होगे सो मैं नहीं कह सकता। पर जो ज्ञान हम को हर दिन के काम से होता है उस से हम भले हो सकते हैं। पर जो विद्या काम में नहीं आती उस से किसी का भला नहीं होता। तुम्हारा भला तब होगा जब तुम जो सीखते हो उस के अनुसार काम भी करो। विद्या सीखके भी जो लोग उसे काम में नहीं लाते उन को ज्ञानी वा बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता। पर जिन लोगों ने विद्या नहीं सीखा वे जो कुछ जानते हैं उसे काम में लावें तब वे ज्ञानी और बुद्धिमान कहला सकते हैं और उन के द्वारा बहुतों का भला होगा।

ज्ञान को काम में लाने का मतलब क्या है उसे तुम को समझाने के लिये मैं तुम्हें एक मांझी की कथा बताऊंगा। अगले समय का एक बड़ा लम्बा खोदा हुआ पत्थर मिसर देश से रोम नगर में लाया गया था। उस के रखने के लिये जब एक चबूत्रा तैयार किया गया तब काम के सर्दार ने उस बड़े पत्थर को उठाने के लिये एक कल बनाई। पत्थर उठाने का काम देखने के लिये हजार २ मनुष्य उस स्थान पर आये। पर जिस में शोर न मचे इस लिये राजा ने आज्ञा दिई थी कि जो ऊंचे शब्द से बोलेगा वह कैद किया जायगा। कल चलने लगी और वह बड़ा पत्थर भी धीरे २ ऊपर उठने लगा पर पत्थर के भार से जो रस्सी बढ़ जायगी उस का सोच

सर्दार ने नहीं किया था। सो वह बड़ा पत्थर चबूत्रे के बराबर तो उठा पर उस के ऊपर न चढ़ सका। कल उसे और एक इंच ऊपर उठा न सकी एक मांझी वहां था उस ने चिल्लाके कहा रस्सी को भिंगाओ रस्सी को भिंगाओ इस पर एक सिपाही ने उसे पकड़के कैद किया। फिर सर्दार ने सोचा कि हां नई रस्सी को भिंगाने से वह छोटी होगी और पत्थर चबूत्रे पर चढ़ेगा। उस ने रस्सी को भिंगाने की आज्ञा दिई और तब पत्थर चबूत्रे पर चढ़ा। तब राजा ने उस मांझी को दो सौ मोहर इनाम दिया और उस को कैद खाने से निकाल दिया।

नई रस्सी वा कोरे कपड़े को भिंगाने से वह सिकुड़ जाता यह बात उन लोगों में से बहुत लोग जानते तो थे पर उस मांझी को छोड़ कोई और अपने इस ज्ञान को काम में नहीं लाया। लोग यदि बराबर अपने ज्ञान को काम में लावें तब वे रोगी नहीं होते वे बहुत बिपत से बचते और उन का जीवन दूसरों के लिये नमूना होता।

मैं ने तुम्हारी माता से सुना है कि तुम ने खीष्ट के छोटे बंधू नाम सभा में अपना नाम लिखाया है। मैं समझता हूं कि खीष्ट के प्रायश्चित्त के कारण ईश्वर ने तुम्हारे पापों को क्षमा किया है और तुम को आत्मिक जीवन मिला है। जैसे शरीर और मन का भला चाहते हो वैसाही आत्मा का भी भला चाहो इस लिये तुम्हारे आत्मा की भलाई के लिये अब मैं तुम को दो एक बात लिखता हूं।

शरीर को साफ रखने के लिये हर दिन नहाना चाहिये यह बात सब कोई जानते हैं। आत्मा को भी नहाना धोना होता है। इस बात को पढ़के तुम चकित होगे। पर सच तो

यह है कि ईश्वर के बचनरूपी जल में तुम को अपने आत्मा को ठहराये हुए नियम पर नहाना होगा नहीं तो तुम्हारे आत्मा की भलाई नहीं होगी। बैबल शास्त्र पढ़ने से तुम को पवित्र शिक्षारूपी जल मिलेगा।

मैं तुम को बता चुका हूं कि सांस लेने से लोहू का दोष दूर होता है सो सांस लेने से जैसे लोहू साफ होता है वैसाही आत्मा के पाप को दूर करने के लिये अपने पापों को मान लेना और प्रार्थना करना आवश्यक है। ईश्वर से बराबर प्रार्थना करो। उस के साम्हने अपने सब पापों को मान लो। अपनी घटती अपनी इच्छा अपने मन के सोच बिचार सब उस के साम्हने कहो।

जैसे शरीर के लिये भोजन वैसे आत्मा के लिये भी भोजन का दरकार है। पर यह बड़े शोक की बात है कि बहुतेरे मनुष्य आत्मा का क्या भोजन है नहीं जानते। आहार करने से हमारे शरीर में बल होता है वैसा ही ईश्वर की आज्ञा पर चलने से हमारा आत्मा बल पाता है। मैं ईश्वर की आज्ञा पर चल नहीं सकता ऐसी बात कभी न बोलना क्योंकि यदि तुम छोटे बालक हो तोभी ईश्वर तुम्हारी सहायता करने को तैयार है। सो तुम ईश्वर की सहायता से उस की इच्छा पूरी कर सकते हो। यीशु ने कहा था कि मेरा भोजन अपने भेजनेहारे की इच्छा पर चलना और उस के काम करना है।

ईश्वर की इच्छा यह है कि तुम सीधे पवित्र और दया-वन्त हो यह बात तुम जानते हो। तुम कैसे लोगों से दोस्ती करोगे कैसे स्कूल में पढ़ोगे कौन सा रोजगार करोगे इन बातों में भी ईश्वर की इच्छा है। बैबल शास्त्र में सब बिषयों में

ईश्वर की इच्छा खोलके बताई हुई नहीं है। नीचे लिखे नियमें। पर चलने से ईश्वर की इच्छा पर चलना तुम्हारे लिये सहज होगा।

१ जिस बात में तुम का सन्देह हो उस बात में ईश्वर की इच्छा क्या है ईश्वर ही से पूछो। वह तुम को अपनी इच्छा निश्चय बता देगा।

२ सोचो। ईश्वर ने हम का सोचने की शक्ति दिई है और वह चाहता है कि हम उसे काम में लावें। ईश्वर की इच्छा जो हमारे लिये होती है हम उस पर जितना सोचें उतनाही समझेंगे कि वह हमारे लिये सब से बढ़के भला करनेहारी है।

३ अपने माता पिता और भले लोगों से सलाह लिया करो क्योंकि वे बहुत ज्ञान रखते हैं उन की सलाह लेने से तुम उन के ज्ञान का फल पाओगे। साधारण रीति से ईश्वर एक भले पुरुष से दूसरे की सहायता करता है।

४ अपनी इच्छा से चैाकस रहो। बहुत लोग भूल से अपनी इच्छा को ईश्वर की इच्छा मान लेते हैं।

५ जिन कामें को करना उचित समझते हो उन को यत्न से करो। आज के उचित काम को करने से तुम कल के काम को करने की शक्ति पाओगे। ईश्वर की एक इच्छा पर चलने से वह तुम को अपनी दूसरी इच्छा बतावेगा।

६ ऊपर लिखे पांच उपायें को छोड़ ईश्वर की इच्छा जानने का दूसरा उपाय नहीं है सो ऊपर लिखे पांच उपायें से जो तुम ईश्वर की इच्छा समझो उसे पालन करो।

७ काम करके उस के अन्त फल की बाट जोहो। हो सकता है कि पहिला फल दुःखदाई हो। एक दिन तुम्हारी माता

यात्रास्वप्नोदय नाम एक पुस्तक पढ़के तुम को सुनाती थी। तुम को स्मरण भी होगा कि स्वर्ग में जाने के लिये ख्रीष्टियान ने जब नाश नगर को छोड़ा तब निराशारूपी दलदल में फंसा पर वह धैर्य्य धरे रहा तब स्वर्ग में पहुंचा। हो सकता है कि तुम को देर लगे पर निश्चय जानो कि उस काम के अन्त फल को देखके तुम जान जाओगे कि तुम ईश्वर की इच्छा पर चले हो।

ता: १३ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ———

प्यारे ज्ञानीलाल।

लड़के बुरी शिक्षा और अभ्यास के कारण बिगड़ जाते हैं पर ईश्वर ने तुम को ज्ञानी माता पिता दिये हैं जिन्हों ने तुम को बुरे मार्ग से बचाया। इस लिये ईश्वर का सदा धन्यवाद करना चाहिये। जो बुरी आदत में पड़ गये हैं उन से जो हम भले हैं इस बात को कभी मन में आने देना नहीं चाहिये। पर इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि वे जिन बुरे नमूनों को देखके बिगड़े हैं ईश्वर ने अपनी दया से हम को बुराई से बचाया है।

वे लोग यदि हमारी नाईं भली शिक्षा पाते तो क्या जाने कि हम से भी बढ़के भले होते। और जैसी बुरी संगति में वे रहते हैं यदि वैसी बुरी संगति में हम को रहना पड़े तो क्या जाने हम उन से भी बुरे होते।

जो बुरे और मूर्ख लड़के कभी भली शिक्षा नहीं पाते उन को

अपनी मूर्खता और बुराई का बुरा फल भोगना पड़ता है। पर बताओ तो सही क्या हम लोगों को उन के लिये कुछ करना नहीं चाहिये। यह समझो कि यदि हम दश मनुष्यों के साथ एक घर में सोये हों और उस घर में आग लग जावे और यदि हम को मालूम हो कि आग लग गई है तब क्या और दश साथियों को जगा देना नहीं चाहिये। ऐसी दशा में यदि हम उन को जगा न देवें तो हम अवश्य दोषी होंगे। यदि कोई मूर्खता के कारण बुरा काम करता है तो हम को उसे भली शिक्षा देके उस की बुरी आदतों को दूर करना चाहिये और यदि हम ऐसा न करें तो हमारा आत्मा कैसा बुरा है।

जो लड़के बुरे खेल खेलते हैं उन में से बहुतेरे नहीं जानते कि उन को बुरे कामों का कैसा बुरा फल होगा क्योंकि किसी ने उन को नहीं चिताया। उन का आगे को भला होना क्या जाने हमारे ही हाथ में है। यदि हम उन्हें चिता देवें तो वे भले हो जावेंगे। हम यदि उन की भलाई के लिये यत्न न करें तो वे अपने पापों में मरेंगे और समाज की भी बड़ी हानि करेंगे। इस लिये उन को चिता और समझा देना चाहिये कि उन का पाप उन के सुख और शान्ति को नाश करता और उन्हें सुधरने नहीं देता है। भले लोग पाप को मन से घिन करते हैं और ईश्वर पाप से अप्रसन्न रहता है।

ऐसे बुरे लड़कों को चिताना बड़े लोगों से नहीं बनता क्योंकि लड़के उन से अपनी बुरी आदतों को छिपाते हैं पर तुम बालक हो वे तुम से अपने पाप नहीं छिपावेंगे। जब तुम उन के बुरे कामों को देखो तब उन्हें भले उपदेश दिया

करो। तुम्हारे उपदेश से यदि एक भी बुरे बालक का मन फिरे और वह भला होवे तो कैसे आनन्द की बात होगी।

भला तुम मुझे बताओ यदि किसी मनुष्य के साम्हने ठोकर हो तो उस ठोकर को हटा देना अच्छा है कि जब उस के पांव में ठोकर लगके उस का पांव टूट जावे तब उस की सेवा करना भला है। इस के उत्तर में तुम अवश्य यह कहोगे कि ठोकर का हटाना भला है। वैसाही लड़कों को बुरे मार्ग में से फिराने से बुरे मार्ग में जाने से रोकना भला है। ठोकर को हटा देना टूटे पांव की सेवा करने से सहज काम है। इस लिये लड़कों के साम्हने से ठोकर अर्थात् बुरी पुस्तक और बुरी तसवीरें हटा देना चाहिये कि उन के द्वारा लड़के बिगड़ न जावें।

तुम यदि किसी लड़के को छिप २ के बुरा काम करते देखो तो सब के साम्हने उस की निन्दा न करके निराले में मीठी बातों से उसे समझा दो और उसे बता दो कि उस बुरे काम से उस की कैसी हानि होगी। क्योंकि यदि तुम उस की निन्दा करो वा लोगों के साम्हने उसे समझाओ तब लोक-लाज के मारे और बदनाम होने के डर से वह भले मार्ग पर नहीं चलेगा और जिद के मारे वह और भी पाप करता जावेगा।

डाक्टर यदि देखे कि किसी रोगी का पांव सड़ गया है और उस के मरने का डर है तो वह उस घाव पर मल्हम लगाता नहीं जाता पर वह उस रोगी का प्राण बचाने के लिये उस के पांव को काट डालता है। इसी रीति पर तुम यदि देखो कि तुम्हारे साथ पढ़नेहारे लड़कों में से कोई लड़कों को बुरी आदतें सिखाता है तब तुम को उचित है

कि तुम उस बुरे लड़के को स्कूल से निकलवाने के लिये बड़े शिक्षक से उस की बातें कह दो। साथ के पढ़नेहारे के नाम पर ऐसा कहना आनन्द की बात तो नहीं है पर दूसरे साथ के पढ़नेहारों को उस बुरी आदत से बचाने के लिये और उन की भलाई के लिये तुम्हारे लिये यह भला है कि तुम उस लड़के को स्कूल से निकलवाने का यत्न करो।

जो लड़के ईश्वर का भय नहीं करते वे समझते हैं कि उन का सब से बड़ा काम यह है कि लड़कों को दण्ड पाने से बचावें। सो वे झूठ बोलके वा सच बात को नहीं बोलके शिक्षक को धोखा देते हैं। तुम यदि मेरी बातें मानो तो छोटे बालकों को सब प्रकार की बुराई से बचाओ। ऐसा करने से बहुतेरे तुम को भेदिया कहके तुम्हारी निन्दा करेंगे और तुम से डरेंगे। इस पर तुम अपने मन को कच्चा न करना। तुम्हारे इस काम से तुम ईश्वर के भक्त ठहरोगे। ईश्वर तुम से प्रसन्न होगा। और जो लड़के बुरों की संगति में नहीं पड़े हैं वे बच जायेंगे।

ताः १४ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——

प्यारे ज्ञानीलाल।

जो लड़के बुरी आदत में पड़के रोग लगा लेते हैं और फिर बुरी आदत छोड़के भले चंगे होना चाहते हैं तुम वैसे लड़कों को भली सीख देके सहायता कर सको इस लिये मैं तुम को कई एक बातें बताता हूं। चोट लगके यदि शरीर में घाव हो तो वह घाव झट सूख नहीं जायगा। पर वह घाव

कितना बड़ा है और उस की दवा कैसी होती है इन दो बातों पर उस का चंगा होना है। हो सकता है कि घाव के चंगे हो जाने पर भी जब लों वह जीता रहे घाव का दाग बना रहेगा। वैसाही लड़के का रोग कितना भारी है और उस की कैसी दवा दारू होती है इन दो बातों पर उस के चंगे होने की आशा होती है।

अपवित्र होना महापाप है। पर यदि कोई लड़का अपनी बुरी आदत को छोड़ने चाहे और ईश्वर के पास अपने पाप की क्षमा चाहे तब हो सकता है कि ईश्वर उसे चंगा करे। यदि कोई ईश्वर से तो क्षमा चाहे और आप उस आदत को छोड़ देने का यत्न नहीं करे तब वह कपट करता है। फिर यदि कोई अपने ही यत्न पर भरोसा रखे और ईश्वर की सहायता नहीं चाहे तो वह नास्तिक है। ऐसे लोगों को चंगा होना अन्होना है। भला चंगा होने के लिये ईश्वर के साथ मिलके काम करना चाहिये।

११ और १२ तारीख के पत्रों में शरीर को पवित्र और पुष्ट रखने के लिये जो २ उपदेश मैं ने दिया था उन पर उन लोगों को चलना चाहिये जो भला चंगा होने चाहते हैं। किसी लड़के की सहायता करने के पहिले तुम चित्त लगाके उन दो पत्रों को पढ़ लेना। जिन लड़कों ने बुरी आदत में पड़के रोग बिसाया है वह एक अठवारे वा एक महीने वा एक बरस में भले चंगे हो जायेंगे इस बात की आशा नहीं होती। पर बरसों भले चंगे होने के नियमों पर उन को चलना होगा।

लिंग की चोटी पर यदि दर्द हो और वह सहज से धोया न जा सके तब लड़के को चाहिये कि अपने माता

पिता से यह बात कहे जिस में भले डाकृर को बुलवाके वे उस का इलाज करावें।

जब ज्वर वा सिर में दर्द होता है तो लड़के अपने माता पिता से इस बात को कह देते हैं वैसा ही लिंग में किसी प्रकार का रोग होने से उन्हें कह देना चाहिये। जो लड़के लाज के बश आके ऐसी बातें अपने माता पिता से नहीं कहते उन को ऐसी लाज छोड़ देना चाहिये। ईश्वर ने हमारे एक २ अंग को बनाया है। यदि प्रयोजन हो तो किसी अंग की बात कहना बुरा नहीं जिस में लड़के दुःख न पावें उन के माता पिता उन के लिये बड़ा यत्न करेंगे और पैसे खर्च करेंगे कि वे चंगे हो जावें।

जो लड़के बुरी आदत से बचना चाहते हैं उन के साथ मिलके ११वीं और १२वीं तारीख के पत्र को पढ़के सुनाओ और उन से कहो कि थोड़ा २ शक्ति अनुसार टहला फिरा करो। काम उपजानेहारी पुस्तकों को तो मत पढ़ो पर भली पुस्तकों को पढ़ा करो अपने मन को अपने बश में रखो। पुस्तक पढ़ने के समय दूसरी बातों पर चित्त न लगाना। जब एक अध्याय पढ़ चुको तो उस की सारी बातों को याद कर लो तब दूसरा अध्याय पढ़ो। सो शरीर और मन दोनों को बश में रखने से तुम को साहस और फुर्ती होगी। तुम अकेले एक खाट पर सोओ। चित्त नहीं पर करवट सोया करो। बहुत कपड़े रात को मत ओढ़ना। भोरे नीन्द टूटतेही खाट से उठो बिछौने पर पड़े न रहना क्योंकि वैसे समय में स्वप्न दोष हुआ करता है। बुरे लोगों को संगति मत करना पर उन के साथ सत्संग करना जो ईश्वर से डरते हैं और तुम्हारा भला कर सकते हैं। कोई काम न हो तो अकेले मत

रहना क्योंकि अकेला रहने से बुरा काम करोगे। अपने जीवन भर ईश्वर की इच्छा पूरी करो। हर एक काम को करने के समय ईश्वर की सहायता लो। निराश मत होओ। ईश्वर अवश्य सहायता करेगा सो तुम अपनी बुरी आदत को छोड़ दोगे और बहुतों के आशीर्वाद के कारण होगे।

ताः १५ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——

प्यारे ज्ञानीलाल।

जिस पालने में तुम्हारी छोटी बहिन अब सोती है कितने बरस पहिले तुम उस में सोते थे। पर अब तुम पालना छोड़ पूरी अवस्था के हो चले। और दो एक बरस तो तुम लड़का कहलाओगे फिर तुम्हारा लिंग और उस के साथी कई एक और अंग जो तुम्हारे शरीर में छिपे हैं पूरे होंगे और जाग उठेंगे। शरीर के साथ ही साथ तुम्हारा स्वभाव भी बदल जायगा। शरीर और मन के बदलने का कारण न समझके बहुत लड़के उस समय दुःख और क्लेश में पड़ते हैं।

इस बदलने के विषय में मैं तुम को दो एक बातें लिखना चाहता हूं। उस समय मूछें निकल आतीं। कंठ का स्वर बदल जाता और बच्चे जन्माने के लिये लिंग में बीज पैदा होने लगता है। इस अवस्था के पहिले लड़का और लड़की एक ही स्वभाव के रहते और इस के पीछे लड़के पुरुष के और लड़कियां स्त्री के स्वभाव की होती हैं।

नन्हा बच्चा जब जगत में जन्मता है तब उस को बहुत बातों की शक्ति नहीं होती क्योंकि उसे उन शक्तियों की

आवश्यकता नहीं होती। जैसा प्रयोजन उसे होता है वैसी शक्ति ईश्वर उस को देता है। पहिले तो बच्चों के दान्त उस के मसूड़ों में छिपे रहते। जब बच्चा छः सात महीने का होता तब दो एक दान्त निकलते और छः सात महीने में जब बच्चा बलकर चीजें खाता है तब उस के बहुत से दांत निकल आते। लड़के और लड़कियां यदि भले चंगे रहें तो अपने से बाल-बच्चे जन्माने की शक्ति उन में १२ वा १३ बरस तक मानो सोई रहती है। फिर जननेन्द्रियां मानो जाग उठतीं और बढ़ने लगती हैं। उस के पीछे १० वा १२ बरस में लड़का लड़की पूरी अवस्था के होते हैं। लड़केवालों का स्वभाव जब इस रीति से बदलने लगता है तब उन्हें लाज आने लगती है। कंठ का स्वर मोटा हो जाने से वे गीत गा नहीं सकते उन को नई बातों की इच्छा और चिन्ता होती है। वे तब जानने लगते हैं कि वे पुरुष हैं और लड़कियां स्त्री हैं।

ईश्वर का भय और धर्म्म का ज्ञान नहीं रहने से ऐसी दशा में काम के तेज होने से और बुरे लोगों की संगति में पड़के जवान लोग बड़ी परीक्षा में पड़ते और पाप भी करते हैं। जिस प्रभुता को काम में लाने के लिये वे सिरजे गये उसे समझने लगते हैं और माता पिता की भली बातों को आनन्द के साथ नहीं मानके उन्हें सुनी अनसुनी करने लगते हैं। स्कूल में पढ़ना लिखना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता पर स्कूल को छोड़ना चाहते हैं।

अंधड़ को आते देख मल्लाह मांझी नाव के पाल समेटके बांध देते तो बच जाते हैं पर यदि उन के अनजान अंधड़ आ पहुंचे तब वे बड़ी भारी बिपद में पड़ते हैं। जवानी की परीक्षारूपी अंधड़ से बचने के लिये मैं तुम को यह बातें

कहता हूं। धीरज धरो निराश मत होओ। जब तुम बीस बरस के होगे तब तुम देखोगे कि अंधड़ थम गया फिर धूप दिखाई देती है और हवा धीरे २ चलती है। तुम यदि ईश्वर की दया से तब तक बचे रहो तब तुम्हारे जीवन का मार्ग बहुत कुछ सीधा हो जावेगा। पर यदि तुम अज्ञानता अपवित्रता वा और किसी पाप के बीज को बोओ तब तुम को जीवन भर दुःखरूपी फसल काटना होगा।

अब तुम ने कुछ २ समझा होगा कि जवानी कैसी बड़ी परीक्षा का समय है। मैं आशा करता हूं कि ईश्वर की महा दया से तुम मेरे पत्रों के उपदेश पर चलके सारी बिपद से बचोगे।

ता: १६ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री — —

प्यारे ज्ञानीलाल।

सब समेत मैं ने १७ पत्र तुम को लिखे हैं। बालकों की बात मुझे भाती है। इस लिये तुम्हारे माता पिता के कहने से मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मन लगाके मेरे पत्रों को पढ़ने से मैं समझता हूं कि तुम ने अपनी भलाई के लिये बहुत शिक्षा पाई है। पिछले दिन के पत्र को पढ़ने से तुम ने समझा होगा कि कई एक बरस के भीतर जो तुम्हारा शरीर और स्वभाव बदल जायगा मैं उस अवस्था के लिये तुम को तैयार करता हूं। बहुत जवान आदमी नहीं जान सुनके बड़ी २ बिपद में पड़े हैं इस लिये मैं तुम को बिपद से बचाने चाहता हूं।

जिस स्वभाव के बदलने की बात के विषय मैं ने कल तुम्हें

पत्र लिखा था वह सब लड़कों को ठीक एक समय नहीं होता। कभी कभी १० बरस की अवस्था में और कभी कभी १६ बरस की अवस्था में यह बदलना दिखाई देता है। कभी २ जाति और आबहवा के फरक से पर बराबर शरीर के पुष्ट होने पर स्वभाव बदलता है। यह बदलना गरम मुलकों में जल्दी और सरद मुलकों में देर से होता है। स्वभाव रोजगार और आदत इस में सहायक होते हैं। पर सार बात यह है कि जो लड़के भले चंगे और हृष्ट पुष्ट रहते हैं उन को जवान होने में देर लगती है पर जिन को रोग लगता है वे जल्दी जवान होते हैं। आमों में भी यही बात देखी जाती है। गाछ में बहुत आम हरे रहते और दो एक पीले हो जाते हैं। पर उन आमों को तोड़के देखा जाता है कि वे पुष्ट होके नहीं पके पर उन में कीड़े लगने के कारण वे पक गये।

बालकों का यह स्वभाव है कि वे पूरी अवस्थावालों की नाईं होना चाहते हैं। साथ के पढ़नेहारों का जो हुआ है यदि उन का वह न हो तो बहुत लोग दुःखी होते हैं। इस लिये कोई २ लड़के बुरी आदत में पड़ते कि जल्दी बड़े हो जावें। पर जो लड़के धीरज से चंगे रहने के नियमों पर चलते कसरत और मेहनत करके अपने शरीर को पुष्ट करते जवानी की परीक्षा को जय करना उन को कठिन न पड़ेगा पर सहज होगा।

समय के पहिले जवान होने का यत्न मत करना। जो जल्दी जवान होते वे जल्दी बूढ़े भी होते।

मैं समझता हूं कि जो २ उपदेश मैं ने तुम को दिया है उन को समझ बूझके मानोगे। मेरी पिछली बात यही है देर मत करो। एक दिन रात को एक आदमी

ने स्वप्न देखा कि वह नरक में गया है और वहां एक बड़ी भारी सभा बैठी है। शैतान उस सभा का सभापति है। उस ने आसन पर बैठके कहा कि आज यह सभा इस लिये एकट्ठी किई गई है कि एक नया उपाय रचना चाहिये जिस से बहुत लोग नरक में आवें। तिस पर दियावल नाम एक भूत ने उठके कहा मैं पृथिवी पर जाके सब लोगों से कहूंगा कि ईश्वर ऐसा प्रेम करनेहारा है कि वह पाप का दण्ड नहीं दे सकता। नरक के विषय जो बातें कही जाती हैं वह ठीक नहीं नरक है ही नहीं। इस शिक्षा को पाके लोग ढिठाई से पाप करेंगे सो ईश्वर उन को नरक में डाल देगा। उस के कहने के पीछे दूसरे भूत बड़े आनन्द हो ताली पीटने लगे। तब सभापति ने कहा तुम्हारी यह चातुरी लहेगी नहीं लोग तुम्हारी बात न मानेंगे। क्योंकि वे ईश्वर के रूप में सिरजे गये हैं उन का मन उन को बताता है कि पाप का दण्ड होगा। फिर वे पृथिवी पर भी देखते हैं कि पाप का दण्ड होता है।

फिर अबद्दोन नाम दूसरे भूत ने कहा कि मैं पृथिवी पर जाके लोगों को शराब अफीम भांग गांजा चरस चण्डू हर तरह की नशा करनेवाली चीज को काम में लाना सिखाऊंगा। तब वे नशेबाज हो जायेंगे। ईश्वर ने तो कहा है कि शराबी स्वर्ग में जाने नहीं पावेंगे। फिर भूत आनन्द से ताली पीटने लगे। फिर सभापति शैतान ने खड़ा होके कहा नूह के समय से कितने लोग तो नशा करके यहां आये हैं पर तौभी नरक नहीं भरा। इस से बढ़के और कोई दूसरा उपाय निकालो।

फिर अलसेटिया नाम और एक भूत ने खड़ा होके कहा कि मैं पृथिवी पर जाके जो लोग भला काम करने चाहते हैं

उन से कहूंगा देर करो बहुत समय है। घबड़ाओ मत। कल पाप को छोड़ना। कल प्रार्थना करना। कल दूसरों का उपकार करना। अभी नहीं शाम को गिरजा जाना। यह बातें सुनके भूतों के साथ शैतान भी आनन्द करने और ताली पीटने लगा और सब कहने लगे अब ठीक हुआ हम उस की बात मानते हैं। सो उन्हों ने उस भूत को झट पृथिवी पर भेजा।

अब लों अलसेटिया चारों ओर पृथिवी पर फिरता है और लोगों से कहता है समय बहुत है। मत घबड़ाओ। कल पाप छोड़ना। कल प्रार्थना करना कल दूसरों का उपकार करना। इस लिये हे ज्ञानीलाल मैं तुम से कहता हूं कि तुम ने जो भला काम करने को ठहराया है उस में देर न करना। इस पत्र को पढ़के किसी निराले स्थान में जाके घुटने टेकके ईश्वर से प्रार्थना करना कि प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा वह तुम्हारे पापों को क्षमा करे और तुम को पवित्र मन दान दे कि तुम उस के सन्तान हो जाओ तुम भी उस के साम्हने अंगीकार करो कि मैं अब से मृत्यु लों उस का सच्चा सेवक बना रहूंगा। मैं भी प्रार्थना करता हूं कि धरती पर ईश्वर तुम को आशीर्बाद दे और स्वर्ग में तुम को अनन्त सुख का भागी करे।

ता: १७ माघ १३०३। तुम्हारा भला चाहनेहारा।

श्री ——